॥ श्रीः ॥

# काव्यरत्नाकर।

## जिसमें

अनेक प्रकारकी प्राचीन एवं नवीन कविवरोंकी सुरसमयी और अनूठी लेखनी द्वारा लिखित "समस्यापूर्ति" के सुललित और मनभावन अनेक रसोंसे परिपूरित सुन्दर कवित्त वा सवैया हैं.

### कुंडलिया।

या "रत्नाकर" में अमित भरे रत्न अनमोल ॥
अति आनन्द बढायके लेहु इन्हें जिय खोल ॥
लेहु इन्हें जिय खोल लगत हैं कैसे नीके ॥
मृदुल मनोहर पुंज गुंज रहे मनो अर्मीके ॥
कहैं बनवारीलाल सुधासम लगत सुधाकर ॥
त्यों रसिकन मनहरन काव्यको यह 'रत्नाकर' ॥

जिसको काव्यानुरागी पं. सूर्यनारायण त्रिवेदीजी की सहायतासे,

बाबू बनवारी लाल गुप्त सदरबाज़ार निवासी ( ज़िला-जबलपूर ) ने भाषा काव्यरसिकोंके चित्तविनोदार्थ सपरिश्रम प्रकाशित किया।

---

अधूरा देखनेकी आज्ञा नहीं है.

इस पुस्तकके सर्वाधिकारी परोपकारी हिन्दी हितैषी

खेमराज श्रीकृष्णदास "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-प्रेस-मुंबई.

H
891.4318
G824
SHELF LISTED

# प्रार्थना।

सर्व साधारण काव्यरसिक महाशयोंसे सविनय निवेदन है कि, जो इस ग्रंथके अंतमें कुछ समस्या अपूर्ति लिखी है यदि जो सुकवि सज्जन महाशय कृपापूर्वक उनकी यथाशक्ति सुन्दर पूर्तिकर निम्नोक्त नामधाम पर प्रेषित करेंगे तो हम उन महाशयोंके परमानुगृहीत होंगे. और उन पूर्तियोंमें जो उत्तम पूर्ति होंगी उसे हम समाचार पत्रोंमें प्रकाश करनेके पश्चात् जो नवीन पुस्तक प्रकाशित होगी उसकी एक प्रति उन पूर्तिकर्ता महाशयोंके प्रसन्नतार्थ उनकी सेवामें पारितोषकार्थ प्रदान करेंगे. (पतापूरा आनेपर) आशा है कि सुकवि महाशयगण अवश्य अविलंब इस प्रार्थनापर ध्यान दे हमें प्रोत्साहित करेंगे।

सुकवियोंका दास—
बनवारी लाल गुप्त,
सदरबजार जबलपूर.

NATIONAL LIBRARY
NO. 5663
DATE 24.1.62
CALCUTTA

पंडित सूर्यनारायण त्रिवेदी
मंत्री, "नागरी—साहित्यरसिकसभा"
स्थान सदर बाज़ार,
जबलपूर.

H
891.431
Gu.82
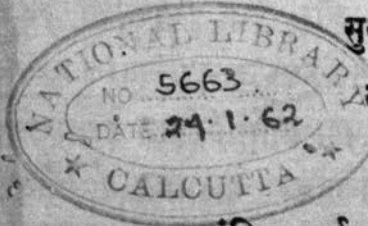
# निवेदन पत्र।

## नागरी रत्नभंडार.

सम्प्रति नागरीकी दुरावस्था से नागरी पुस्तक समूहका एक स्थानमें संग्रह अर्थात् पुस्तकालयों का भी अत्यन्त अभाव है. विशेषतः इस क्षुद्र नगर जबलपूर सदरबाज़ार में परमावश्यकता है. अतएव सभाने इस अभावके पूर्त्यर्थ प्रयत्न किया है, वरन् यह महत्कार्य विन सर्व सज्जन हिन्दी हितैषियों की सहायताके होना दुर्लभ है. इसकारण समस्त हिन्दी भाषाके ग्रंथकार, सुलेखक, तथा यंत्राधीशोंसे विनय है कि निज अद्वितीय पुस्तकों की एक २ प्रति कृपापूर्वक अर्पण कर सभाके उद्देशकी पूर्ति कीजिये, और यह भी संकल्प किया हैं कि नित्य नवीन मनोहर ग्रन्थ नाटक, उपन्यास काव्य, प्रहसन, भाण आदि रचेजायँ और उन पुस्तकोंका स्वत्व हिन्दी प्रेमी यंत्राध्यक्षोंको प्रदान किया जाय इसकारण सम्पूर्ण हिन्दी हितेच्छुक यंत्राधिकारी महाशयोंसे निवेदन है कि उक्त पुस्तकोंको प्रसन्नतापूर्वक प्रकाशितकर मातृभाषा हिन्दीका जीर्णोद्धार कीजिये और हमारे उत्साहको वृद्धिगत कीजिये।

पं० सूर्यनारायण त्रिवेदी मंत्री,
"नागरी साहित्यरसिकसभा"
स्थान—सदरबाज़ार, जबलपूर.

# धन्यवाद।

हम अतिशय कृतज्ञतापूर्वक प्रगट करते हैं कि, हमारे काव्यानुरागी पंडित श्रीसूर्यनारायण त्रिवेदीजीने हमारी प्रार्थनानुसार इस ग्रंथके संग्रह करनेमें अमित सहाय्रता प्रदान कर हमें अनुग्राहित किया, जिससे हिन्दीभाषा काव्यरसिकानुरागी महाशयोंको भी इसका आनंद प्राप्त होगा, और वे देखेंगे कि वर्तमानसमयमें भाषा काव्यकी क्या दशा है. अंतमें हम अपने श्रीमान् परमसुजान खेमराज श्रीकृष्णदास योग्य बम्बई निवासी कोभी शतशः आन्तरिक धन्यवाद देते हैं कि उक्त महाशयने इस ग्रंथके मुद्रांकका सहर्ष स्वत्व स्वीकार कर हमारी विशेष सहायता की है.

स्थान<br>सदर बाजार,<br>जबलपूर.

आपका कृपाकांक्षी,<br>बनवारीलाल गुप्त.

# उपक्रम।

श्रीसच्चिदानंद आनंदकंद सर्वगुणाकर कृपासागर परमेश्वरको कोटिशः नमस्कार है कि, जिसकी अलभ्यकृपासे आज हमारी मनोकामना परिपूर्ण हुई कि "काव्यरत्नाकर" ग्रंथ प्रकाशित हुआ. नागरी भाषाके प्राचीन एवं नवीन ग्रंथोंके संग्रह करने तथा रचनेमें हमारा स्वाभाविक अनुराग नित्य रहता है और अनेक प्राचीन वा नवीन ग्रंथ हमने सपरिश्रम खोज २ कर एकत्रित भी किये हैं उन सुन्दर ग्रंथोंके प्रकाशनार्थ भी हम सदा प्रैयत्न करते हैं. परंचं शोक है कि द्रव्याभाव और हमारे भारतवासी महाराजोंसे लेकर निर्धनतक सर्व सामान्यमें पाश्चिमीय शिक्षाके प्रादुर्भावसे हमारी मातृभाषा देवनागरी ( हिन्दी ) की कैसी दुर्दशा होरही है ? अस्तु. इस लघु ग्रंथके प्रकाश करनेका अभिप्राय यह है कि, बहुधा हिन्दी समाचार पत्रोंमें नित्य नवीन मनोहर समस्यापूर्तिके कवित्त वा सवैया अनेक विषयोंके अनेक काव्यरसिकों द्वारा प्रकाशित होते हैं और मनुष्य अज्ञानतावश उन सुन्दर काव्योंका अपमान कर रद्दीमें फेंक देते हैं, जिससे कुछ लाभ नहीं होता है. इसकारण हमने यह विचार सपरिश्रम प्राचीन वा नवीन उत्कृष्ट कविता, भक्ति, शृंगार करुणा, वीर, प्रेम, हास्य, प्रभृति विविध रसोंसे परिपूरित संग्रह कर उक्त ग्रंथको प्रकाशित किया है. यदि काव्य रसिकानुरागियोंकी कुछभी प्रीति इस ओर दृष्टि पड़ेगी तो शनैः २ हम अन्यान्य

## उपक्रम।

मनभावन और सुललित काव्योंके ग्रंथोंको भी प्रकाशित करेंगे. आशा है कि काव्य प्रेमीजन इस "रत्नाकर" के रत्नोंको छाँट अपने कंठका हार बनावें और शंख वा घोंघोंको निरुद्यमी मूर्खोंके निमित्त छोड़कर हमारे परिश्रमको सफल कीजिये और हमारा उत्साह बढ़ाइये. महाशय यद्यपि यह "रत्नाकर" है, तो भी यह न समझना कि शंख वा घोंघोंसे रहित है।

आपका कृपाकांक्षी बनवारीलालगुप्त,
स्थान सदरबजार
जबलपूर.
ता० २९-४--९५ ई०

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

# समस्यापूर्ति रत्नाकर ।

## मंगलाचरण ।

दोहा—आदिदेव दाता सुमत, वंदौं दोउ कर जोर ।
दास जान रखियो कृपा, चितवत हौं तुव ओर ॥
शिशधरत तुंव चरण पै, विनवत वारंवार ।
पुरवहु सब मनकामना, हृदय सुनेक विचार ॥
नहिं विद्या नहिं बुद्धिबल, और नहीं कछु ज्ञान ।
ग्रंथ समस्यापूर्ति यह, अवलोकहु धरि ध्यान ॥

सोरठा—विनवहुँ वारंवार, गणनायक गजवदनको ।
लघुमतिके अनुसार, संग्रह कर यह ग्रंथ शुभ ॥
संतनको कर जोर, विप्रनको प्रणाम करि ।
मति मेरी है थोर, कृपादृष्टि करिये सबै ॥

सवैया—गणनायकके पदवंदत हौं अब वेग कृपाकर दुःखहरो ।
महाराज कृपा करो दीनन पै इमि नेक न यामें विलम्बकरो ॥
बनवारी पुकारत देर भई शंका प्रभु आनके तुरत हरो ।
दोऊ कर जोर करौं विनती गणनायक आय सहाय करो १ ॥
करिवर वदन सदन गुणके गणनायक बुद्धि विनायक हो ।
बनवारी कहे कर जोर प्रभु निज भक्तनके सुखदायक हो ॥

हो बुद्धि प्रकाशन कष्ट हरन अरु दुष्टन हित भयदायक हो॥
मम लाज रखो निज दासजान गणनायक आय सहायक हो२

समस्या १—हमहूं पै कृपा कबहूं करियो ।

श्रीनंदनंदन आनंदकंद सदाजन आनंद सों भरियो ।
मोरपखा मुरली बनमाल कपोलन कुंडल सों लरियो ॥
ज्यों गज द्रौपदी दासन पीर हरी बहुबारहिं त्यों हरियो ।
सो कविनाथ दया करिके हमहूं पै कृपा कबहूं करियो १॥
चम्पकरूप कटाक्ष कटारसे कलिकुंदसे दंतनसो भरियो ।
कंदुकभेव सजे कुच कंचुकी नवली त्रिवली की भली परियो।
नीवी नितम्बकी कान्ति छटा पै लटा मन भोगी नटा हरियो
कविनाथ भनै रति मूरतसी हमहूं पै कृपा कबहूं करियो॥ २॥
सुनो उद्धव योगको जाल कहां लौं फैलायके गोपिनको छरियो
नाहिं एकचलेगी तिहारी यहां कै अनेक उपाय नहीं तरियो॥
शिवकी यह बात अलीक नहीं तुम चेत सोया चितमें धरियो।
यह जाइके गोपिसँदेश कहो हमहूं पै कृपा कबहूं करियो ३॥
अक्रूरके साथ हो जात जो नाथ तो क्रूरस्वभाव नहीं धरियो।
बिनवौं पग लागिके तोहिं लला पुनि गोकुल आनँद सों भरियो
विरहानलज्वालको ताप महा दिनचारिमें आइके सो हरियो।
शिवहू करजोरके टेरत है हमहूं पै कृपा कबहूं करियो ॥ ४॥
दलि दारुण दारिद दुःख घने चित चिंतितक्लेश कबै हरिहो।
गृहभार अपार कि व्याकुलता तनु दुर्बलते कब धों टरिहो ।

कबधों भवशोक तरंगनिते क्षमिके अधमों तरनी तरिहो ।
दृगफेरि फते सम दीननपै प्रभु दृष्टि दया कबधों करिहो॥५॥
कबधों निजभाव अनुग्रहते शरणागतमें करुणा धरिहो ।
दुखदायक भासिक अल्पअहै कबधों यह आपतिको हरिहो॥
सब पातक नाथ क्षमा करिके मम कारजको कबलों सारिहो।
दृगफेरि फते सम दीननपै प्रभु दृष्टि दया कबधों करिहो॥६॥

समस्या २—केहि कारण पानीमें आग लगी—

रघुनन्दन सिंधुसमीप खड़े मग मांगत बानि विनीतिपगी ।
दिन तीन गये विनती न सुनी प्रभुके रिसि राशि हृदय उमँगी॥
बलदेव सेजा धनुबान जबै तब सागरमें अति ज्वाल जगी ।
दधि डोबनको रुख राम कियो यहि कारण पानीमें आगलगी १॥
जब देव अदेव पयोधि मथ्यो तब देश हलाहल भीर भगी ।
हरि कूदि परे यमुना जलमें उगल्यो विषनाग सो देह दगी ॥
जब लंक दह्यो बलदेव तबै बरखे घन औरहु ज्वाल जगी ।
वड़वानल सिंधु बसे नितही यहिकारण पानीमें आगलगी॥२॥

समस्या ३—केहि कारण शेषके शीश हजार ।

कद्रू कश्यपकी पतिनी पतिसेय प्रसन्न कियो यकबार ।
नाग सहस्र मेरे सुत होइँ यहै बर दीजिये मोहिं उदार ॥
सो सुनि आशिष दीन्ह ऋषै बलदेव अनन्त लियो अवतार ।
एकमें अंश सहस्र हुं को यहिकारण शेषके शीश हजार॥३॥
जो भगवन्त अनन्त कहावत जासुके अंग सहस्र विचार ।

सो सहसानन रूप भयो फन एक धरचो वसुधाकर भार ॥
गान करे बलदेव नितहिं परमेश्वरके गुण नाम अपार ॥
छंन्द अनेक उचारणको यहि कारण शेषके शीश हजार॥ २॥

समस्या ४—प्रीति पुनीति भई परतीतसों ।
पर्यंक पै जात लजात सदा नहीं गात छुवे पतिको सुठिभीतसों।
मुख घूँघटही में छिपाये रहे नहीं नाह सों नेहकरे पुनि हीतसों॥
शिव कोटि उपाव करै तबहूं नहिं बैनकढै कबहूं रसरीत सों ।
अलीसोइ ललीको लखेकिनआजसोप्रीतिपुनीति भई परतीतसों

समस्या ५—मानो पानी परो कुम्हलानी लतामें ।
पिय जायके छाय विदेश रमें दिनरात रहौं उनहींके पतामें ।
प्रेमके फंदकी फाँसी परी उन नाम रटचो मैं मंद गतामें ॥
इक प्रातकी बात सुनी सजनी जब जात नहानको गंगतटामें ।
उन्हें आवत देखके मग्नभई मानो पानी परो कुम्हलानी लतामें १
प्रभुपुरको इक ब्राह्मण भेद नहीं प्रभु आये रही दुचितामें ।
राक्षसने कर कीन्हो जो हाथ भयो यह जीव सदा विपतामें ॥
रुक्मिणी होय अधीर विशेष पै ध्यान दियो प्रभुकी प्रभुतामें ।
प्रभुआगमविप्रसुनायो जो आय मनोपानीपरोकुम्हलानीलतामें२
रास समय नंदलालने खेल अनोखी रची सबही वनितामें ।
अंतर्ध्यान भये क्षणमें जब देखी सखी सबही ममतामें ॥
स्तुतिठानि अनेकन भाँति कही प्रभु नाहिं कोउ समतामें ।
प्रगटें गोपाल मुदित सखियां मनो पानीपरो कुम्हलानीलतामें ३

यूथके यूथ जो भूप लगे सब एक ते एक बडे प्रभुतामें।
शंभु शरासन टारिसकै नहिं मींजत हैं कर एक मतामें॥
श्रीरघुनन्दन भंज्यो चाप नहीं कोऊ एको रह्यो समतामें।
यहविलोकिसियाजी मग्नभई मनोपानीपरो कुम्हलानीलतामें ४
उन्नतिकी रचिरंच विलोक सो आश उमंग धरी ममतामें।
बीजबयो जिन बीरु वेधन्य करो सब सींच मिले इकतामें॥
कालके तेजसे जाय न सूख रहे व उपाय कछू कमतामें।
आज भयोमन येतोआनंद मनो पानी परो कुम्हलानी लतामें ५
अनेकन बीर सने रसबीर अनेकसने रसकी कवितामें।
अनेक वियोग अरु प्रेमसने सो अनेकन हास्यसने लहितामें॥
अनेकन रौद्रको भाव बताय सनो यह शब्द विधों जगतामें।
मेलकियों यों होयगो हर्ष मनो पानी परो कुम्हलानी लतामें६॥
धीर धुरीन धरा अधार गयो गढ़ लंककी हेमछटामें।
आयो त्रिलोकीनाथ जबै घननाद प्रहार कियो है गदामें॥
शंभुकी शक्तिको मान दियो अरु खेंचलयो तब होत नशामें
देख दशा लघु भ्राताकी उन मनो पानीपरो कुम्हलानीलतामें ७

समस्या ६—करमींजत भामिन हेतु न जान्यो।

लंकेशने सीय हरी प्रभुकी निजमुक्ति विचारके बैरजो ठान्यो।
निजरानीनेदीन्ही सलाह अनेक पै अंत विचारिकेनेकनमान्यों॥
बहुभाँतिविचारिकेजानिलयीपियशीशपै आयकेकालतुलान्यों।
हाथ दई कह हाथ दई कर मींजतभामिन हेत न जान्यों १॥

एक समय यमुनातटमें गोपाल जू जायके रास जो ठान्यों ।
गोपिका मान भयीं जबहीं मनमोहन ते बहुमान जो ठान्यों॥
गर्व प्रहारी जू देखो जबै सब गोपिन जीवमें गर्वसमान्यों ।
अंतर्ध्यान भये प्रभुजी कर मींजत भामिन हेतु न जान्यो ॥ २ ॥
सबदेख विचारकरें मनमें प्रण हैं दृढ ये मिथिलापति ठान्यों ।
नहिं सीयविवाह विरंचिरच्यो यह खेद सबैहिय बीच समान्यो॥
नारि समाजमें धूममची नहिं जानतवर परब्रह्मलिखान्यो ।
हाय दईकर हाय दईकर मींजत भामिन हेतु नजान्यो ॥ ३ ॥
आई छबीलि छटाको बगार अटा चढ भारत सुःखपलान्यों ।
रूप विचित्र विलोक थके अरु रीझपचे कछु स्वाद न भान्यों ॥
नेहको नातो गयो बढ़ बेग सुकेल कुटुंब करै मनमान्यों ।
हार प्रतीत गई हियमें कर मींजत भामिन हेतु न जान्यों ४॥
राजतथे सुखके सब साज अरु गाजतथी विथा मन मान्यो ।
द्रव विलोक द्रवैबहु लोग गये हिय हारिमिल्यो न ठिकान्यों॥
नेहको मेह भरो सब गेह विदेह हो मेल शरीर समान्यों।
हाय भयो कहभारत आज कर मींजत भामिन हेतु नजान्यों ५॥

समस्या ७—हमसे तुमसे अब काज कहा है ।

नहिंकानकियो जो पियाने कह्यो अवधेश परीक्षहि लीन्हचहाहै
धारि सिया बपुबाद कियो प्रभुसे यह कीन्ह अनर्थ महा है ॥
भाव सुभक्ति विचारि हिये तज शंभुसती श्रुति पंथ महाहै ।
सुन प्राणप्रिया इहि हेतुविषै हमसे तुमसे अब काज कहा है॥ १॥

करके करार गयो निशि आवन आयो जो लालप्रभात यहां है।
बात सुने हरि हाथ गहे उर नागरी छायो अनन्द महा है॥
झक झोरत बाँह किये रिसऊपर बात भली ये सुनाई कहा है।
जहँ रैन बसे तहँ जाव लला हमसे तुमसे अब काज कहा है २॥

समस्या ८–पहिचानत है तेहि लानत है।

झकिमारनको बनि व्यासके पंडित वेद पुरान बखानत है।
करिदान अनेक नहायके तीरथ पुण्य कहानिन छानत है॥
हरिचन्द जू प्रेम नहीं हियमें वृथा भ्रमकी वह ज्ञानत है।
परमेश्वर कौन जुपै जगमें पहिचानत है तेहि लानतहै॥ १॥
मन जो मनमोहनके सँगको विहिको फिर फेरके आनत है॥
अरुझाइ चुकी हगताहि कोऊ जगमें सरुझाइवो जानतहै॥
जब प्रीतिको प्रेत लगै सजनी कि सिखावन मंत्रते मानत है।
यह आसव पीके पतिव्रतको पहिचानत है तेहि लानत है॥२॥
यह ऊधव श्याम सखा है सखी पर प्रीतिकी रीति न जानतहै।
विजया घसि ज्ञानको छानभले तजि आनन नाकसों पानतहै॥
हम लोगनसे कहें योग करो सबते बड़ योग बखानत है।
उलटी बुध प्रेमतो योग बड़ो पहिचानत है तेहि लानत है॥ ३॥

समस्या ९–जायतोजायभलेतनजोपरकैहूंनहींहमरोप्रण जाइगो।

आजलों जो न मिली तुमसों धरि धीरहिये दुख यौंसबिताइगो॥
ताइगो तेरो शरीर समीर वियोगलता तबहूं मुरझाइगो॥
आश मिलाप धरे रहिये जगमोहन एक दिना मिलजाइगो।
जायतो जाय भले तन जो पर कैहूं नहीं हमरो प्रण जाइगो १॥

होये न जैसी लिखी करतार लिलार हमारे डरों न डराइगो ।
बूडै चहे कुल कान अली निज बात न हौं कबहूं बिसराइगो॥
पै जो कहीजगमोहनसों मिलिहैं मिलिहैं नाहिं अंतर ताइगो ।
जायतो जाय भले तन जो परकैहूं नहीं हमरो प्रण जाइगो२॥
काहे न धीरज धारे रहो इक यौसतो हों मिलिबोहुलसाइगो ।
आवेघरी घरी वाही घरी जब जीवनकों सुखहू तुम पाइगो ॥
सोइयखोइ संदेह सबै जगमोहन एक दिना बिलसाइगो ।
जायतो जाय भलै तन जो परकैहूं नहीं हमरो प्रण जाइगो३॥
तेरो धरे नहिं धीरज हीयतो हो हीं सदा विरहागी जराइगो ।
कैसी करों धिक प्राण औ कानाहिं जाके रहे सबही बिनशाइगो
एक रही मिलबेहीकी आश सोहा जगमोहन वाहि लगाइगो ।
जायतो जाय भलै तन जो परकैहूं नहीं हमरो प्रण जाइगो॥४॥
देखो अली वह जीवनमूरिसो कैसो हमें हँसिके तरसाइगो ।
नैनसो नैन मिलायके भौंह कमानलौं तान कहूं बिरमाइगो ॥
होंतो बिकी जगमोहन हाथ तो होय जोमेरे लिलार लिखाइगो।
जाय तो० ॥ ५ ॥

जो२कही तुम दीन्ही लिखी मिलि है तुमसों सुई क्यों बिसराइगो
जो पै कही समुझावनहीके लिये पुनिक्यों बिश्वास जनाइगो॥
जो न पतिआवे कही अपनी जगमोहन पाती कहोवो दिखाइगो
जायतो जाय भलै तन जो परकैहूं नहीं हमरो प्रण जाइगो॥६॥
हैकेअधीरलिखी पतियां कबको मिलिबो तुमसों ठहराइगो ।

बात बनावती रोज सुनो हँसिके सबहीविध जीव हराइगो ॥
बीते निते जगमोहन यौसनिशाबिरवाह है क्यों तरसाइगो ।
जाय तो जाय० ॥ ७ ॥

कैयकबार लिखीं प्रणकें अब तो भला पूरो करोउरझाइगो ।
हाय दई सहिये किमि पीर विना तुम यौस सुनो निद्रायगौ॥
चाहतप्राण चले जगमोहन फंद फसे अबको सुरझाइगो ।
जाय तो जाय० ॥ ८ ॥

जो अब पूरी करें न अहो सजनी रजनी दिनदूनो दिखाइगो।
औधि विसासनि दीन्हीं कहूं जगमोहन जीवजरो अकुलाइगो।
पावत कोटिकलेश तऊ बरुपिंजर प्राण शरीर उडाइगो जाय तो जाय० ॥ ९ ॥

जो मन तेरे दगाही रहे जगमोहन नेहतगान लगाइगो । पै लगीछूटेते छूटे भले जब प्राण शरीरहि संग छुटाइगो ॥ काहे लिखी पतियां बदके करकै गँहिरो प्रणधीर धराइगो। जाय तो जाय भले तन जो परकैहूं नहीं हमरो प्रण जाइगो ॥ १० ॥

समस्या १०—हारहियेको सम्हारन लागी ।

सोई हुती नवला परयंक पै शंक विना सबरैनकी जागी ।
वाके छुटे कुचपे कच श्यामल वेंदी सरोरुहआनन रागी ॥
तौलों पती पग आहट कान सनेह भरी रस पीयके पागी ।
चौंक उठी जगमोहन केश औ हार हियेको सम्हारन लागी १
सोई निशंक जहां परयंक वितान कलिन्दका पी अनुरागी ।

फूली निवारीजुही जलकूल लख्यो जगमोहन स्वप्नमें पागी ॥
प्यारी गह्योकर चुम्बन लै पपिहा सुनकूकसुचौंकके जागी ।
नींदकेडारे रह्यो मन अन्त सुहार हियेको सम्हारन लागी२॥
पी परदेश मलूकर धौसकटे गृहकाज भयो दुख भागी ।
ज्यों त्यों भई रजनी अपनी सजनी समसाजिके सेजलेजागी ॥
ध्यान धरे टुक नींदलगी मुरलीधर आपकह्यो विरहागी ।
जानि उरोज खुले जगमोहन हार हियेको सम्हारन लागी३॥
बैठी वधू जागिके उठि सोवत मींजतहाथन नैननरागी ।
भूली शरीर दशा सजनी सँग प्रेम अलाप विलापमें पागी ॥
चेत रह्यो न कहां अचरा जगमोहन आयो तहां अनुरागी ।
चौंकी चितै झट घूँघटलाय सुहारहियेको सम्हारन लागी॥४॥

समस्या ११—कृपाकर दीनको दास करे रहो ।

जबलों तन प्राण बसे तबलों शुचि धर्म विचार सुधीर धरेरहो ।
बलदेव सदा उपकार दया दृढ संगति साधुन साजसरेरहो ॥
सुख हर्ष विषाद समानसहो शिर अंक न पै परतीतिपरेरहो ।
निशिवासर ईशसों यों विनवो कि कृपाकरदीनको दासकरेरहो१
सुनिकेबिनती बहु बाल बली कहराम उठो सुखसों बिचरेरहो।
हम चाहत ना कछू और प्रभू यहि अंगदको बलि बाँहधरे रहो ॥ जबलों न तजों तन ह्यां तबलों मुनिमानस हंससुयो हिंसरे रहो । जनमोंज्यहि योनि तहूं बलदेव कृपाकर दीनको दासकरे रहो ॥ २ ॥ अब जाहु सखा अपने गृहको नितनेम

हिये ममध्यानधरे रहो। सुनिके अतिशोच भयो मन अंगद आयसुतात शरण्यपरेरहो॥ पदपंकजको तजिजाऊं कहा प्रभु बाँह गही सुसहीपै अरेरहो। जल नैन भरे विन्ती बलदेव कृपाकरदीनको दासकरे रहो॥ ३॥ परतीत सुप्रीति सुधारेहु रामहि रामहिके पथप्रेम परे रहो। पद पंकज ध्यान सदा उरमों एक रामहिको करिआश अरेरहो॥ गुणज्ञान निरंतर रामहि त्यों फलजीवन पाय मही विचरे रहो। विन्ती बलदेव सुदीन दयालु कृपाकर दीनको दास करे रहो॥ ४॥ जबलों जनिहो नहिं ईश उदार विकार ग्रसे कलिज्वालजरे रहो। तन मानुष लै धिक जीवनहै खर शूकर श्वानहि तेइ तरे रहो॥ पद मोह दुराशभरे बलदेव निरंतरही भवफन्द परे रहो। सुख होयं तबै भजिये प्रभु पाहि कृपाकर दीनको दासकरेरहो

समस्या १२ वीं। धूम है फिरंगनकी—

लाट बन बैठे हैं मुलुक दाद सुनिवेको हाईकोर्ट मुंशफी अदालतादि रंगनकी। हाकिम हमेशा सांच किज़िब विचारे बेश आगही आईन आछे मामल तरंगनकी॥ गोरैशाही सेनापति दरबार सुदेश देश जीतत नरेश बलदेव सुउमंगनकी। दखल दुहाई विक्टोरिया फिरा है चारु चित्त चाहु चाकर सुधूम है फिरंगनकी॥ १॥

काबिल कचहरी फिरंगही हुक्कामन हैं बने हैं फिरंगही जमात शाह जगनकी। मुलुक मताहेदी मुलाटहू फिरंगी

है कौशली अनेक इन्तजामी हैं तरंगनकी ॥ शहर २ देश देशन दखलदारे सीधी लैन रेल्वे चलावत उमंगनकी । दौडरहीं बग्गिन सुठेल टमटमादि ट्राम कहैं बलदेव देखो धूम है फिरंगनकी ॥ २ ॥

बखत हुमायूं सु अशोकसिंह महाराज बीरसेन चक्कवै व लालसेन जंगनकी । भूपति घनेरे लक्ष्मणसिंह कीन चेरे शाहनसिकन्दरसे तखत तरंगनकी ॥ मुहम्मद औरंग वो सुलेमान शेरशाह, कवि बलदेव जाह देखत उमंगनकी । दंगन दमामें त्यों बिलाने वेशशाहनको आयो राज्यकंपनी सुधूमहै फिरंगनकी ॥ ३ ॥

समस्या १३ वीं । बंक चितौनि चितै मुसकाई ।

बैठी हती सजनी गनमें सजनीके बनाय हिये हरषाई ।
त्यों तेहि औसर मांह सुजान जु आय गयो तेहि ठांव कन्हाई
देखि हियो मनमत्थजगो दुरि वे हित कांकर लाल चलाई ।
सोहे सखीनके रोष कियो इत बंक चितौनि चितै मुसकाई १
मेनकी मूरतिसी ललना निज मंदिर सोवतथी सुखपाई ।
वाहि समय पिय प्यारे सुजान जू आय तहां रतिबात चलाई
लाज मनोजमें पागि गई तिय हां नहिं नाहिं कछू न बसाई ।
प्यारे तऊ निज बात लही जब बंक चितौनि चितै मुसकाई २
मौनवे मौन पिया दुलही रही मौन ते बैठि हिये दुखपाई ।
त्योंहिं सुजान जू जावक देनको नाइन सासुरेकी वहँ आई ॥

माड़ि महाउर चित्रितके पग हासिबेको इमि बैन सुनाई।
प्यारे परे रहैं पाँय तिया सुनिबंक चितौनि चितै मुसकाई ३
सोवत राधिका थीं सुखसेजपै आयगये तेहि ठांव कन्हाई।
वेगि जगाय अचानकही रतिरंगनकी तहँ बात चलाई ॥
भाषत गंगापरसाद यही तिय देखत श्याम गई सकुचाई।
लाज भरी कछु बोली नहीं पर बंकचितौनि चितै मुसकाई४

समस्या १४ वीं। तेरी सों आंख पै आंखन देखी।
देखी आंखें उन पक्षिनकी अरु कीर पतिंगनकी बहुदेखी।
देखी हैं केतिन वेश्यनकी अरु रानिनहूकी अनेकन पेखी॥
पेखीं बहुतक पशुनकी जलजीवनकी तो करोरिन लेखी।
लेखी गंगापरशाद सबै पर तेरी सों आँख पै आंख न देखी १

समस्या १५ वीं। हायबाल रेजासी करेजाकाढि लैगई।
सुन्दर स्वरूप चन्द्रवदन अनूप लखि जात मोहि भूप ऐसो रूप बाढि दैगई। दाडिम दशन मृदु प्यारकी हँसन चित चाहकी फँसनमें कसन गाढि कैगई॥ केसर तिलक घुँघरारीसी अलक दिखलायके झलक चित्ररूप ठाढि कैगई। नैनसैनें नेजा बच्चूराम चित रोजा वह हाय बालरेजासी करेजा काढ़ि लैगई ॥ १ ॥

चम्पक बरन अति कोमल कमल राशी दीपत शिखासी ज्योति अंगमें उदे भई। देखत स्वरूप शीघ्र मोह जात रूपमान छूटं जात ध्यान ज्ञान चेटक सौ कैगई॥ झांकिके

झरोखे झलकाय छबि चोखे युग भृकुटी चढायके झटाकर देगई । बच्चूराम नैननकी सैनन चलाय बान हाय बाल रेजासी करेजा काढि लैगई ॥ २ ॥

केशर सों अंगपर केशरके रंग सजे मोती गुहे मंग रति रंग रूप ह्वै गई । रम्भासी रमासी, मेनकासी मृदु सोहे गात शचीसी उमासी सुखराशी ज्योति कैगई । तडित तरंगन सो अंगन शृंगार शुचि रूपको दिखाय प्रेम प्रीति बेलि बैगई । बच्चूराम नैननकी सैनन, चलायबान हाय बालरेजासी करेजा काढि लैगई ॥ ३ ॥

गौर गात कोमल कलित बैसवारी बीच दीपक शिला सों द्युति चित्तमें चुभैगई । अंगनू विभूषन सुरंगन बसन छबि जोबन तरंगन मतंग गति है गई ॥ चन्द्र मुख उज्ज्वल कुरंगदृग दीरघ पै दाड़िमदशन देखि सुमति नशै गई । रंग रूप बैस बैन सैन पञ्चबान मारि हाय बाल रेजासी करेजा काढि लेगई ॥ ४ ॥

समस्या १६ वीं । यह अवाई जान कामकी ।

कारि मुख ओट पट पेखति उरोजतन पग गति विविध करति बाल बामकी । भूषन सजित अति मधुर वदति बात सोरहों शृंगार कला बारहों ललामकी ॥ कहैं द्विज रसिक सुप्रेमको वधिक करु बेकल पथिक कत कहौं रसनामकी । चरचा चवाई बात शुभगो बनाई कहू कतहूंन पाई यह अवाई जान कामकी ॥ १ ॥

जाय जिनि गोकुल सुन सखी मैं बुझाऊं तोहिं चोर बटपार पन्थ लगे रहे श्यामकी । तामें तू अकेली कोउ सहेली नाहिं तेरे साथ लोक लज्जा होवेगी पिताके तेरे नामकी ॥ भूषन जडाऊ जेते जडे तेरे अंगनमें इन्हें कमजाने तू यह सब है बडे दामकी । येतेके सोच नहीं माने मैं तो हर्षराम पे यह शोच दाहत है अवाई जौन कामकी ॥ २ ॥

कलित कलीन कस किंशुक ललित बन बिछी सो फरस रस बसबसु जामकी । चांदनी तनीं सो चन्द चांदनी चहूंधा चारु चञ्चरीक चारन चपल मत वामकी ॥ कबिसितकंठ कहैं कोकिल कुहुक हैन कूक शूरबीरन सुनाई गति बामकी । लाईना अबेर मान गढ़पै चैढाई फेर सुरभ सुहाई न अवाई नृप कामकी ॥ ३ ॥

छाई तरुणाई रंग रूपकी निकाई अंग अंगन तरंग दरशाई छबिधामकी । चंचल चलाई मंद २ मुसकाई अरु दृगनकी श्यामताई बाम अभिरामकी ॥ फबत "फतेह" फेर बसन सुगं धताई चाह अधिकाई बरभूषणललामकी । ऐसी गतिलाई रुचिमोहकी प्रबलताई बैस या सुहाई में अवाई जान कामकी ॥ ४ ॥

समस्या १७ । वीं सोई बीरताई है ।

धीर चितधारै सब इन्द्रिन को मारै "फते" बुद्धि को सँवारै करिशीलकी दृढाई है । सकल बिकारै तजि सत्यको सुधारै

जगजालको बिसारै हरिभक्ति अधिकाई है । पर उपकारै ब्रह्म जीवके विचारै तजि मांसको अहारै जीह जाय में जमाई है । विषय निवारै भ्रम खेद भेद टारै जोई ऐसे उपचारै रुचि सोई वीरताई है ॥ १ ॥

तनुके सुदेश में महीपति स्वतंत्र मन मंत्रिनं विवेक रुचिरोष की सुनाई है । वञ्चक अनेक पञ्च विषय विकार अरु इन्द्रिन के गुण यह आत्मा रिझाई है । कहत "फतेह" एक मनहीको जीते पुनि इन्द्रिन को त्यागे सुख जीव मुक्ति पाई है । कामजीत क्रोधजीत लोभ मद मोह जीत पांचहूँ को जीते तब सोई वीरताई है ॥ २ ॥

लेतही कमान निज समान नपीजाने भूमि अधे मुख डोले फिरे जैसे कोई नाई है । वाटिका तडागनके पक्षिनको मारे आप शोरकर मारे घर आपे निज दाई है । माई औ भौजाई भाई सबनको मारे खूब दुर्बल को मारै जैसे चढे भूत बाई है । सुनतही मुहीम को अफीम की तयारी भई हरषराम कहे कहो याही वीरताई है ॥ ३ ॥

सुनत ही नगाडे चोप उठे बेखौफ आप मनमें उछाह मुख कमल सों छाई है । जूझिवे को चाव पांव टरत नहीं पाछे को मोर तोर मारे चोट कोटि भहराईहै ॥ राखे नाहिं औड़न औ करोड़न में घमशान है गज कोट एक रामकी दुहाई है । रुण्डनते कृपान सान छूटे नहीं शूरमा की हर्षरामकहो वीर याही बीरताई है ॥ ४ ॥

DBA000005663HIN

समस्या १८वीं। बैस तो सिरानीपै न मानी बात ज्ञानीकी
बालही समयते अन्ध फन्द सब करन लागे भागे निज धर्महि
ऐसी बदनामीकी। तियनके संग रंग ढंग में बितायो दिन
फूले फूले फिरत बात बकते हैं ज्वानी की। आंख में अंधेली
औ अधेली की न भूली सुध मेरी २ करते बरबाद जिन्द-
गानीकी। हर्षराम कहैं प्रभू ध्यान में न लायो शठ बैसतो
सिरानी पै न मानी बात ज्ञानी की॥ १॥

जानी अनजानी की निशानी नैहिं जानी कहूं मति घब
रानी मनो गति बड रानी की। मानत कहानी वेद बानी
नयमाबी भयो ऐसो अघखानी बदै मानीबेईमानी की। कहे
शितिकंठ तेरी स्यानप भुलानी सब हितकी न मानी न प्रमानी
पहिचानी की। एरे अभिमानी महामूरख अज्ञानी तेरी
बैस तो सिरानी पै न मानी बात ज्ञानी की॥ २॥

समस्या १९ वीं। मुरारि पै प्राणको वारि चुकीं।
सब हांसी करैं डगरी डगरी गरे प्रेमकी डोरि तो डारि चुकीं।
कुलटा कहलाय चुकीं सजनी कुलकी कुलकानि बिगारि
चुकीं। फल होत कहा समझाइबे में अबतो सब सामुझ जारि
चुकीं। कर ऊंचो उठाय पुकार कहों मैं मुरारि पै प्राण को
वारि चुकीं॥ १॥ अब तो जगमें खुलिहै चहुंघा प्रन प्रेमको
पूरो पसारिचुकीं। कुलरीति औ लोक की लाज सबै हरिचन्द
जू नीके बगारि चुकीं। वह साँवली सूरत देखतही अपने

सरवर वहि हारि चुकीं। जगमें कछु कोउ कहो किनहोतो-
मुरारि पै प्राण तो वारि चुकीं ॥ २ ॥

समस्या २० वीं। उपकार कहावत कौन पदारथ।

काल परचो हरिचन्दके राज्यमें सरबस दीन्ह गँवाय प्रजारथ।
त्यों बलि भूप उदार फते करि दान कियो सब वंश कृतारथ॥
इन्द्रके काज दधीचि दियो तनु गीधको प्रान पयान सियारथ।
दानमें लोभ कियो न कछू उपकार कहावत याहि पदारथ १॥
खाइ खवाइ सके न कछू सब जोर छिपाय धरै नहिं स्वारथ।
अन्त फवे सब छोड चले अरु खाय वहायहै लोग अकारथ॥
सोचहैं आपहिं भूल तबै जगमें कछु ह्वैन सक्यो परमारथ।
लोभमें जानो नहीं हमने उपकार कहावत कौन पदारथ॥२॥
बाग लगाय बटिहिनके हित कूप खुदाय कियो परमारथ।
मन्दिर ताल रचे पथिकालय भोजन वस्त्र दियो धर्मारथ॥
जारीहै पुण्य प्रवाह फते सब दुःख उठावत हो परस्वारथ।
ताहूपै पूंछत औरनते उपकार कहावत कौन पदारथ॥ ३॥
लोभ मे झूल रहो निशिवासर ताहि से ह्वै न सक्यो परमारथ।
बैठि कुसंगतही में फते जिन खोइ चले सब आप अकारथ॥
ज्ञान गुरूको धऱ्यो नहिं कान सुदौर थके जगहीं के सुखारथ।
आजही चेत भयो सुनते उपकार कहावत कौन पदारथ॥४॥
जीव सतावन पाप कमावन वैस वितावत मचायके भारथ।
धर्म अधर्महि साथ चले अरु जेजगधंध यहीं के सुखारथ॥

प्राण छुटे बिलगातसबै यह गातहूं साथ न जात महारथ ।
तौहु न चेतत चित्त फते उपकार कहावत कौन पदारथ ॥५॥
मातु पिता सुरभी सुर भूसुर शिक्षक सेइके होत कृतारथ ।
धर्मके कर्ममें लीन रहै वर पावत अंत में सर्व महारथ ॥
दीनन के दुख दोष हरै भरि शक्ति सदैव करै परस्वारथ ।
औरन के हित हो जिहिमें उपकार कहावत तौन पदारथ ६॥
श्रुति चारहु शास्त्र छहों दश आठ पुरानहूं दीन्हू लगाइ यथारथ।
कारज सों करनी जो हुवै अपनी अथवा परके परमारथ ॥
सो सब निवृति याहि सुग्रंथनि ते करते न गयो श्रम कारथ ।
बूझो बतो ना आई तुम्हें उपकार कहावत कौन पदारथ॥७॥
बालापन में साधुनसन्तनके हम टारत राह हरारथ ।
ज्वानिमें त्यों बहु कूप खनाय लगाये सुबागनको परमारथ ॥
वृद्धि में वारि औ अन्न के दान हूं देइ दिवाये सदा उपकारथ।
तापे कहो उपकार करो उपकार कहावत कौन पदारथ ॥८॥
भीम युधिष्ठिर वीर भये निज प्राणहि तुच्छ गिन्यो परमारथ ।
दान दियो बहु ब्राह्मणको उपकारके हेतु तज्यो न सत्यारथ ॥
नृगने किये अपराध अजान परे यहि कारण कूप अनारथ ।
मैं नहिं जानत और कछु उपकार कहावत कौन पदारथ॥९॥
पूजी नहीं अभिलाषै जबै अति गर्व कियो देवराज पदारथ ।
मेघ बुलाय कह्यो रिसयाय अबै तुम जाय करो ब्रजगारथ ॥
आयसु पाय चले घन धाय सबै यदुराय कह्यो न अनारथ ।

लीन्ह उठाय पहाड प्रभू उपकार कहावत याहि पदारथ१०॥
रावण दुष्ट हरो हरि सीतहि श्रीहनुमान सह्यो न अनारथ।
लंक जरायके खाक करी हति कोटिन राक्षस मर्दि यथारथ॥
शक्ति लगी उर लक्ष्मणके गिरि कोहि उपार लियो परमारथ ।
लाजतही सुनबात यहै उपकार कहावत कौन पदारथ॥११॥
हे कवि कोविद ज्ञान सुजान सनेहसमूह कृपालु यथारथ।
भूषन वंश प्रकाशक अंश बितावन हारन काल अकारथ ॥
मो मन शंकहि दूर करो गंगापरशाद कहैपर स्वारथ।
ध्यान लगाय विचार करो उपकार कहावत कौन पदारथ १२
रावण जानकी जाय हरी तब गिद्धने प्राण दिये परस्वारथ।
धेनुके हेतु दिलीपहुने बिचकाननकें हारिसों कियोभारथ॥
देह को दान दधीचिदियो गंगापरशाद कहैं उपकारथ।
पण्डित कुंदनलाल सुनो उपकार कहावत याहि पदारथ १३

समस्या २१ वीं । कहु काके वियोग विभूति रमाई।

प्यारी वियोगके ताप तपी मृग चर्मके आसन लीन्ह बिछाई॥
नेत्र सुअच्छके बिन्दु मणी इक आशके धागन माल सुहाई।
आई सुयोगनि रूप धरे सखियान के द्वारे समाधि लगाई। पूंछें
लगी ब्रजबाला सबै कहो काके वियोग विभूति रमाई॥१॥
प्यारे हमारे गये जबते लिखी पाती कबौं नहिं मोहि पठाई।
आश उसासकी सास जिओं उन प्रीति की रीति सबै बिसराई।
शोचति यों निजमानस में सखियान मिलीं करमाल सुहाई।

पूछें लगी ब्रजबाला सबै कहो काके वियोग विभूति रमाई ॥ २ ॥
काहू वियोगनी रूप धरे सखियानके द्वारेहि फेरी लगाई । नाम
जपै प्रिय नामहि को तुलसी कर माल अहै छबि छाई । दंड
कमंडलु हस्त लिये कटि बीचहि सूहर भंज सुहाई । पूंछे लगीं
ब्रजबाला सबै कहु काके वियोग विभूति रमाई ॥ ३ ॥ छैल
छबीलेके प्रेम पगी हम ताके विछोहन लाज गमाई । काम
दवानल देह दगी अशु आनकी माल बिरागन पाई । तूकर
चन्द कपाल गहे धवली कृत अंमन ज्योति जुन्हाई । बावरी
रात सों बात कहै कहि काके वियोग विभूति रमाई ॥ ४ ॥
. समस्या २२ वीं । केहि कारण रूप धरो गिरिधारी ।
घने दानव भूमि पै बाढे जबै तहँ भूमि गऊ बन दीन्ह पुकारी ॥
बाणी अकाश भई परब्रह्म की संत गऊ की करों रखवारी ॥
होतो अजन्म अनूप अदेह अनादि अलेख विभव उपचारी ।
भक्तन को वर पूर्व दियो यहि कारण रूप धरो गिरिधारी ॥ १ ॥
एक अखंडित व्यापक ब्रह्म अरूप अदेह अनाम अपारी ।
सो लख भक्तन की चित चाह स्वरूप धरे पै रहे अविकारी ॥
निर्गुण ब्रह्म उपासक निर्गुण ध्यान करे गत आप बिसारी ।
सगुन भक्तन पै की दया यहि कारण रूप धरो गिरिधारी ॥ २ ॥
कोप क्रियो सुरराज जबै बर्षावत मूसल धारन वारी । ब्रजके
सब लोग लुगाई भजे बिललात फिरें अति आतुर भारी ॥
सर्ब गोप गुवाल स्वगौवन लै मधुसूदन पास करी जो गुहारी ।
राम नरायण देखे दुखी यहि कारण रूप धरो गिरिधारी ३ ॥

समस्या २३ वीं । काहे गही इतनी निठुराई ।

नित सांझ सबेरे हमारे यहां तुम आवत थे तब आप कन्हाई ।
हियमें लगि ताप बुझाकै सदा सुखदेत रह्यो मुख चन्द दिखाई ॥
जानी न जाय कछू मनकी प्रिय काके समागम रैन गँवाई ।
प्राण पियारे कहो हमसों अब काहे गही इतनी निठुराई १ ॥
कौन उपाय करौं मैं सखी उन कान्हर कों किन दीन्ह ढिठाई
कोट गरीबी में ताप कहों तऊ आवे न नेक हिये करुणाई ।
कैसी अहे वा प्रवीन त्रिया मनमोहन को निज प्रेम लगाई ॥
कैसेहू भूल भई न हती उन काहे गही इतनी निठुराई ॥ २ ॥

समस्या २४ वीं । प्यारी की दृष्टि है काम कटारी ॥

को अस शूर जने जग जौन लगे करि आह परै दुख भारी ।
देखहु खोज सुशील तिहूं पर भाषत हाथ उठाय पुकारी ॥
कौन कहे नरकी सुरकी पशु पक्षिन की बुधि हीन विचारी ।
योगी यती हूं डरे जेहिते अस प्यारी की दृष्टि है काम कटारी १
जो तिहुँ लोकन लोगन को वश माहिं करे अपने बल भारी ।
सो प्रबला अवला कवि भाषत जाने गई उनकी मति मारी ॥
नेक सुशील विचार करी नाहिं नाम धरी उहि प्राण पियारी ॥
प्राण अरी कहतोतो भलो जेहि प्यारी की दृष्टि है काम कटारी २
अंग मनोहर शीतलता अहे तीनहुँ ताप मिटावन हारी ।
त्यों कर कंज मयंक लों आनन है सब भाँति महा सुखकारी ॥
भावतहावहु भाव भले पर एक सुशील है आपवि भारी ।

चीर करे जेहि पीर बढावत प्यारी की दृष्टि है काम कटारी ३
जारी न बातें बनावे यहां जबते हों लखी चढी ताप तिजारी।
होस हवास ठिकाने नहीं नहिं जानत जा केहि ठाम सिधारी।
चीर करेजेहि रेजे करी अरु डॉरी सुशील महा दुख भारी॥
खून भरी रँग रात लखावत प्यारी की दृष्टि है काम कटारी ४
भोक गडी जबते उरमें तबते वह क्योंहूँ टरै नहिं टारी॥
शालति है तन हालत ना परे सेज कराहों मैं रात दिनारी।
होय उपाय कछू तो करो नतु चाहत प्राण सुशील सिधारी॥
भूलहूँ देखत ना यदि जानत प्यारी की दृष्टि है काम कटारी५
नैन लगै अरु पीर करै सिगरे तनको करे खून खुआरी॥
पास न बैठन देतहै काहुहि चाल सबै यहिकी अनियारी॥
नाहिन प्रात सुशीलन सेनाहिं लागन देत इको उपचारी।
आपहि मार जिवावत है अस प्यारी की दृष्टिहै काम कटारी ६
फूलको बान शरासन तानत भारत बालक कोननिहारी।
फौजहु राखतहैं अबलान की जोधनकीनि जिन्हे बल भारी॥
जो कहुँ जोरत अर्जुन रावन राम समान तो होत कहारी।
यों डरते कँपते कहते जब प्यारी की दृष्टि है काम कटारी ७॥
पास रहे तो हुलास भरे कहे जीवन मूरि है प्राण पियारी।
राखत मोपे विशेष कृपा तिरछी दृग ताकि करैहै सुखारी॥
सोई जहां दिन दूरी भई अकुलात सुशील के बाप मतारी
रोवत कातर आरत भाषत प्यारीकी दृष्टि है काम कटारी॥८॥

समस्या २५ वीं । अबला अबलों अवलोकतिहै ।

गवने तजि धाम विदेश पिया त्रिय व्याकुल है अति शोकतिहै।
जब प्रीतम दृष्टिकी ओट भये तब नैनन ते जल रोकतिहै ।
सुखभोग संयोगके छूटतही विरहानल में तनुझोकति है ॥
पति प्रेम फते चढि ऊंचे अटा अबला अबलों अवलोकति है १
छबि खान बखान तो जात नहीं थकि जातकहे कबिकी मति है।
समता किम दीजिय औरन की जेहि देख लजाति हिये रतिहै॥
रति चिह्न निहार प्रभात सोई रिसते पति सों नहिं बोलति है ।
कर दीठ दमोदर पै तिरछी अबला अबलों अवलोकतिहै।।२॥

समस्या २६ वीं । अब जाजिन ऐसी मिजा जनिहैतू ।

आयो नहीं तनु योबनरी सखि मानिन मोतेरताजिन हैतू ।
जाहु अजो प्रिय सेज अरी सुखभोगन में मन राजिन हैतू ॥
प्राण पियारे न भूलकरी कछु काहे इतो इतराजिन हैतू ।
पाँय परेहू न मानतरी अब जाजिन ऐसी मिजाजनि हैतू॥ १ ॥

समस्या २७ वीं । कहु काके वियोग विभूतिरमायो ।

कै तेरे कन्त विदेश रमें तिन्हें खोजन को यह भेष बनायो ।
कै तेरो चित्त लगो हरिसों जिन उद्धवके कर योग पठायो ॥
भाषत गंगापरशादयही कि केहू हित मंत्र औ यंत्र जगायो ।
ये मृगलोचनी चन्द्रमुखी कहु काके वियोग विभूति रमायो १
भ्रात छुटे पितु मात छुटे कुल नात छुटे सबही बिसरायो ।
धाम छुटे सब काम छुटे निज ग्राम छुटे निरमोह कहायो ।

लोग छुटे सुखभोग छुटे उद्योग छुटे त्रियहू बिलगायो।
आलसमें कछु ह्वै न सक्यो तव द्रव्य वियोग विभुति रमायो २
कोमल गौर शरीर मनोहर मंजुल प्रेम तरंग बढायो।
नैनकी सैननें प्राण हरयो सुखमा मुखचंद्र की चित्त लुभायो॥
भूषण चीर सुरंगति पै छबि देख फते नहिं और सुहायो।
मोहनी मूरति देखबेको हम तेरे वियोग विभूति रमायो॥ ३॥
काकहिये केहिसों सजनी मन माने नहीं कितनो समझायो।
जाय फँस्यो वह प्रीतिके फन्दन तातें उबार नहीं बन आयो॥
फेरि विचारि कियो मन मांहकि प्यारीकी प्रीति बडो दुखपायो
तातें भजों रघुनन्दनको सोतो याहिं वियोग विभूतिरमायो४॥
अंजन खंजन नैन नहीं अधरान पै पान नहीं कस खायो।
फूल न बीच सुबेनी खुली अँगराग सुअंगन नाहिं लगायो॥
कंचुकी फाटि धरी कुचमें मरगजी चूनर देह पधायो।
ये संग वासिनी पूंछत मैं कहु काके वियोग विभूति रमायो५॥
एक समय हरिने ब्रजबाल बुलावनको मुनि भेष बनायो।
कूल कलिन्दीके कुंजन में मृग आसन डारि सुनाद बजायो।
सो सुन धाई विलोकन गंग पिछान पिया विच तर्क नहायो।
बैस किशोर अबै तुम्हरी कहु काके वियोग विभूति रमायो६॥
नाम जलन्धरको सुनिकै विय सत्य सतीपनसों दरशायो।
त्यागि विभव भवके सबही जरिछार भई सुपरम्पद पायो॥
सो प्रभु कौतुकसों लखि आप दया वश ह्वै मनमें पछतायो।

गंगकहैं यहिते हरिने तन वृन्द वियोग विभूति रमायो॥ ७ ॥
त्यागि सबै घरकी धन संपति कानन कानन घूमन आयो ।
क्यों तजि भोजन छैरस नीरस शाक चबावन कष्ट उठायो ॥
जो तनु सुन्दर वस्त्र विभूषण जो गतिहै इहि भाँति बनायो ।
सोग मच्यो मुँह सोह रह्यो कहु काके वियोगविभूति रमायो८
भारत नाम प्रसिद्ध सबै जग कौन नहीं मुहि पूजन आयो ।
कौन नहीं नमिके हमसों धन त्यों गुन आपन नाम बढायो॥
हायहमारेहि ऐसे कपूत जने अब जो इमि मोह नशायो।
पूंछत का दुखी भारत ते कहु काके वियोग विभूति रमायो ९
छांडि सरस्वतित्यों लक्ष्मीहू भजो जिनको जियते अपनायो ।
औ बल उद्यम साहसहू तजिके उन दोउन साथ सिधायो ॥
जीव लगै अब नेक नहीं विधि बेमुखभे सब मोर नशायो ।
उत्तर देऊं कहा इहिको कहु काके वियोग विभूति रमायो १०॥
राम युधिष्ठिर विक्रम भोज समान अनेकन पूत चबायो ।
मारि सरस्वति औ लक्ष्मीकहँ सात समुद्रके पार भगायो ।
उद्यम साहस धीर पराक्रम काल कराल सबै विनशायो ॥
पूंछतका दुखी भारतते कहु काके वियोग विभूति रमायो ११॥
राम सियायुत बंधु मनोहर जाय रहे वन बाप पठायो ।
तिन संग सती छल कीन्ह अनामय यद्यपि नाथ बहुत समुझायो
सो अपराधसे त्याग कियो तिन जाय पिताघर प्राणगवाँयो ।
महावीर सदा श्रुतिपंथ रहे शुचि नारि वियोग विभूतिरमायो १२

समस्या २८ वीं। पपिहा जब पूंछिहै पीव कहां।

पिय मोरे विदेश को नाम न लो सुनके उरहोत है शोक महां।
दिन चार न आय भये अबहीं सुसरचो कछु काज न मोरे यहां
इत पावस आय गयो शिरपै तुम मानत ना तजिजात वहां।
धरिहौं किम धीर सुजान पिया पपिहा जब पूछिहैं पीव कहां १
उठि है नभमें घनघोर घटा बक पांति फिरेगी यहां ते वहां।
मुरवा चहुँधा नचिहैं वनमें रचिहैं सखियां सुहिंडोल तहां॥
करिहैं मनमोद ते केलि सबै लखिके हिय होयगो शोक महां।
तुम जाते सुजान बुझाइ है को पपिहा जब पूछिहैं पीव कहां२
तजिकै कुलकान बडों जन की तुमसों करि प्रीति मैं आय यहां।
समुझी घरहाइन की नहिं बात सिखाय रही बहुतेक तहां॥
सोइ पावसहीमें सुजान पिया परदेशमें जान कहो दईहाँ।
यह प्रीति तबै समझी परिहै पपिहा जब पूछिहैं पीव कहाँ ३॥
मनभावन जाय विदेश बसे कछुके न सन्देश पठायो यहाँ।
निशिवासर शोच रहै यहिको अरी काह भयो दई हाल वहाँ॥
जिय चाहतहै विधि पंख जो दे तोय जाय मिलो पियप्यारे जहां।
बिन प्यारे सुजान कहा करिहों पपिहा जब पूछिहैं पीव कहां४
पियप्यारे विदेश को जात तजे सहि जायगो दुःख अतीवकहां।
उनई नई बार घटा नभमें लखि धीर धरायगी तीव कहां॥
बन कूकति केलि कलोलनिते सुनि जीवन धारिहै जीवकहां।
सबते दुख होय सुजान बडो पपिहा जब पूछिहैं पीव कहां ५॥

प्रीतम मेरे बिदेश नजाहु नहीं मेरो चित्त लगेगो यहां ।
पावस में उठे कारीघटा अरु मण्डुक शोर करेंगे महां ॥
गंगापरशाद अंधेरी निशा में अकेली पड़ी मैं रहोंगी तहां ।
कैसे परी कल प्यारे हमें पपिहो जब पूछि है पीव कहां ६ ॥

समस्या २९ वीं । केहि कारण कूप में डोलत पानी ।

पूंछत में नाहिं लाज लगी जलमें कवि कौनहै आप कि सानी ॥
काज सरे जिन बातन सों तिन बातनके हित बोलिय वानी ।
लाभ कहा जो बताय दियो हमते कछु कारण सत्य प्रमानी ॥
शंकर शोच तुम्हें ये वृथा केहि कारण कूप में डोलत पानी १ ॥
बूझिय नीति सुधर्म कथानको बूझिय देहको कौनहै प्रानी ।
बूझिय ज्ञान विवेक विचारहि बूझिय कर्म अकर्म की बानी ॥
बुझहूं शब्द रु ब्रह्म सो जीवहिं बूझहु क्या जग प्रेम कहानी ।
शंकर बूझत लाभ कहा केहि कारण कूपमें डोलत पानी ॥ २ ॥
एक सुनारि शृंगार किये जल लेन गई अति रूपकी खानी ।
नेत्र पराजित मीन तहां भय लीन मनो तनुहै बिन प्रानी ॥
कंज नहीं अब ज्योति निहारिके होय सके अँखियानकी सानी ।
लोटन सो शिर फोर दुखी यहि कारण कूपमें डोलत पानी ३ ॥
गुणकी अगरी डगरी डगरी बगरी गगरी भरिये सुखदानी ।
चपलासी चली चटकीली भली देख्योचहै वारिमें रूप सयानी ॥
चख चंचल चंचल मीन लखे कवि रामनरायण सो थहरानी ।
कूप परी सफरी फरकी तेहि कारण कूपमें डोलत पानी ४ ॥

एक समय जल आननको घरसे निकसी अबला ब्रजरानी।
जात सँकोच में डोलभरन जल खैंचत थी अँगिया मसकानी॥
देखत हीं छतियां उघरीं कवि सन्त कहैं मनसा ललचानी।
हाथ बिना पछतात रह्यो तेहि कारण कूपमें डोलत पानी॥ ५॥

समस्या ३० वीं। रति रस रंगनमें कौन अंग डोलेना॥
कौन कवि कोविद प्रवीणहै यकीन वाला कौन शूरवीर जौन काम रस बोलेना। कौन योगी कौन भोगी कौनहै वियोगी रोगी नारि पर्यंकपै निशंकह्वैकै बोलेना। कौन है पतिव्रता पतिव्रता न जानै जौन करिकै कुसंग कौन कुपथ टटोलेना। कौन वीर काजरकी कोठरीते बचि आयो रति रस रंगनमें कौन अंग डोलेना॥ १॥

चांदनीसे उज्ज्वल सुश्वेत अहिफेनहूसे मन्द २ मारुत अनंग हूते भूलेना। छिटिक रह्यो तारागण यामिनी अँधेरी माहिं ताहू पै कुह २ काकपालि बोलेना। भनत कुबेर केशरी किशोरी कुमार दोऊ वृन्दावन कूलन विहार रस कौलेना। खेले रस रंग ज्यों अनंग रति उन्नतिं है रति रस रँगनमें कौन अंग डोलेना॥ २॥

याम भर यामिनी गमाय जमलेशगये काम २ कामनीकी करिके किलौलेना। आगमन जानि प्राण प्रीतम को प्राण प्यारी परी पर्यंक पै पलकऊ खोलेना। निद्राक्षयको उपचार कीतो कीतो भाँति कीन्हो प्यारीकीतो भांतिन डुलायो

मुख बोलेना । करी जंघा जघन में मैनके उमंगनमें रति रस रंगनमें कौन अंग डोलेना ॥ ३ ॥

तन सुकुमारी द्युति दामिन दमकवारी मैन मदहारी प्यारी संग में किलोलेना । सुन्दर अटारी में निवारी की सँवारी सेज तापै परी उरज उतंग बंद खोलेना । बालमविहारी भुज डारी गले बार बार चूमत कपोल दोऊ लोल मुख बोलेना । मुगधा विचारी सकुचातकर चुपात बहु रति रस रंगन में कौन अंग डोलेना ॥ ४ ॥

बैठी बनबीथिन विशेष बहु बागनकी विसर विहार बल जात लखिलोलेना । बीतीं अँधियारी निशि आधीतऊ आधि नाहिं अति अकुलाय पट खोले पुनि खोलेना।।पिछले पहर पिय आय गहि सेजन पै फेरि मुख माननि मनोज मुख बोलेना । हिय हरषात बरषात रस रंगनमें रति रस रंगनमें कौन अंग डोलेना५

करके शृंगार मांग मोतिनकी सँवारी अति रसकी रसीली सेज पौढ़ि कछू बोलेना । नायक नवीन कोक कलाहू प्रवीन तहां आय मुसकायो कही नीवी क्यों तु खोलेना।।सुनत सुधारो बैन बोली प्राणप्यारी तबै दीजिये जवाब आज कोई मोतेबो-लेना ।। रति रस रंगनमें कौन अंग डोलें नाहिं डोले सब अंग एक नैन कहूं डोलेना ॥ ६ ॥

प्यारी पर्यंकपै पौढ़ी पिय संग सखी मैन मदमाती तऊ नीवी बंद खोलेना । कच मसकेवे लंक लचकत जंघ युग थर २ होत

तन प्यारे को सवोलेना । चुम्बन करत हरषातहिय गंग कवि सीसीसुर रागे दूजो वचन सु बोलेना।आनंद विलास छकी एक टक जोवे मुख रति रस रंगन में नैन सैन डोलेना ॥ ७ ॥

चिबुक अधर कर रसनां ललाट उर जंक और नितम्बनकी हलनि सु भूलेना ।भ्रुकुटी कपोल मोरवान कटि बदरकी शशि दृष्टि नासिकाकी फरकनि बोलेना । भाषत गंगाप्रसाद भूपति मनोज बर ऐसो कोऊ अंग नाहिं जेहि में कलोलेना । सकल सुदेह विच मैन नृप थर थरात रति रस रंगन में कौन अंग डोलेना ॥ ८ ॥

आई है सकारे आज बीर तेरी नई बीर पूंछै क्यों न पीर यो अधीर मुख बोलेना । टारि पट घूंघुट निहार नैन नीचे कर बोली सकुचाय चढी तापतन टौलेना। होसना ठिकाने मेरो अंग२ डोलत है डोलत न जाय मोसों आज कछु बोलेना। बोली नई बीर हँसि हरे हरे राम राम रति रस रंगनमें कौन अंग डोलेना ॥ ९ ॥

केश बिखराय नैन सैननही बात करे भौंह नचैं नासिकाको सिकुर कलोलेना । नाही जी नहींजी किये रसना अधररैंद कंठ सुकपोल रहि जात हैं अडोलेना । बाहु पीठ उरज जंघ और अंग अंग जेते करत प्रसंगको उमंग है उछोलेना । मनहूं मन मांह करे मनन गुनावन तब रति रस रंगनमें कौन अंग डोलेना ॥ १० ॥

बाल है अधीर लाल बाढ़ी तन पीर साल देखो चलि हाल आजु नेक नैन खोलेना । सखियां सहेली जाय बार २ पूंछति हैं परीहै अचेत पर्यंक सटी बोलैना । कहत सुशील धारे कौन परवाह याको दीजियो बुझाय फेर झूलियो हिंडोलैना । जानती तुहूंहो भले झूलत हिंडोले और रति रस रंगनमें कौन अंग डोलैना ॥ ११ ॥

सुरत छबीले संग करत दबाये रही भूषण सखीरी जासों सोरकर बोलेंना । हाहा करी हारी मेरे हरुवे हलाओ अंग झटक झटाक ऐंच खैंचिये निचोलेना । काम मतवारो प्यारो चित्तदै न चेत करे गुरुजन लाज गरुवाई मन तौलेना । ता नो कहा देत मोहिं जानो जू सुजान जिय, रति रसरंगनमें कौन अंग डोलेना ॥ १२ ॥

समस्या ३१ वीं । यारीमें पियारी अति पीअरी परति जात। जबसे लगी है प्रीति श्याम रावरेसों सखी, कीरति किशोरी लोक लाज न मरति जात । चैन न परत दिन रैन मुख देखे विन नैनन न नींद तनु ज्वाला सों जरति जात । खान पान वसन न भावे गृह काज कछु विनहू सताये सबकाहू सो लरति जात । नन्दकेकुमार मनमोहन विहारी जीकी यारी में प्यारी अति पीअरी परति जात ॥ १ ॥

बदन मलीन छबि छीन हीन मारे मन नैनन सदाही जलधारसी ढरति जात । व्याकुल फिरत नाहिं काहूसे कहत

भेद, ठिठुक २ पग धरनि धरति जात। मौन है रहत कुछ शोच में न जानी जात.बोलत बुलाये सांस शीतल भरति जात। काहेको मचाई बिलगाई रे कन्हाई तेरी, यारीमें प्यारी अति पीअरी परति जात ॥ २ ॥

बालम विदेश विरमाये काहू वैरिनने कामिन विलाप आप आपही करति जात। लोग परिवार घर बारहूं अंगार लागे विरह तपन तन तापसी बरति जात।खडे न पड़ेही कछु बैठे न उठेही चैन रैन दिन याही विध शोचन मरति जात।सर्व सुख कारी हितकारी निज स्वामीकी यारीमें पियारी अतिपीवरी परति जात॥ ३॥

खात पान राग रंग द्वेष मद मोह छोड़ काम क्रोध लोभ जीत बासना हरति जात। सत्यशील ज्ञान भक्ति धीर नीति दान धर्म विनय विवेक श्रम साहस करति जात।दीन हितकारी उपकारक सदैवाचित, इन्द्रिनकी रुचि व्रत मारग धरति जात। सन्तनकी देह निराकार परब्रह्महीकी यारीमें पियारी अति पीवरी परति जात ॥ ४ ॥

वामा विन बालम विहाय वंश वृन्द वेष व्याकुल वदन विरहानल बरति जाति।कठिन कराल काल काटति कहांलोंकहों कोमल किशोरी कुल कानहू करति जाति। जाहिर जगतयश यौवन जवानी जोर जान जगदीश योग ज्वालमें जरति जाति। सुन्दर सलोने सुखसिंधु श्याम साँवरेकी यारीमें पियारी अति पीवरी परति जाति ॥ ५ ॥

समस्या ३२ वीं । प्रीति करो तो प्रतीति न छोडिये । पाहनकी प्रतिमा गढीके तहि शीश नवाय दोहूं कर जोडिये । चन्दन अक्षत पुष्प चढाइकै ऊपर ते जल कुम्भहुफोडिये । ध्यान सदा जड कल्पित ईशहै और केहू दिशि चित्त नमोडिये॥ ताहूपै काज सरे तबहीं यदि प्रीति करो तो प्रतीति न छोडिये१ व्याकुलता सियकी लखिकै कह कौशिक राम सों चापही तो-डिये । रानिनके दुख शोच महीपको मानिनके मद मस्तक फोडिये ।-भृगुवरके भ्रमको हरिकै मिथिलेश से आज समागम जोडिये। व्याहो अवश्य विदेहसुता यदि प्रीति करो तो प्रतीति न छोडिये॥ २॥ लीजे न प्रीतिको नाम कभौं यदि कीजे तो अंत लौं फेर न तोडिये।आपने दुःखको आप हरो अरु मित्र व्यथा अपने शिर ओडिये । चाहो सदा हित शुद्ध हिये प्रगटौ गुण अवगुण ते मुख मोडिये। राखि न दम्भ दुराश फते यदि प्रीति करो तो प्रतीति न छोडिये ॥ ३॥ कृष्ण बिछोहमें व्याकुल ह्वै सखियां कहैं श्याम सों नेह न जोडिये। आपतो जाय रमे कुबरी गृह भेजे हमें लिख योगहि ओडिये । कोई कहे वह व्यापक सर्वके आइहे वेग सनेह न तोडिये । जो गुरु भक्ति बढाय रहो यदि प्रीति करो तो प्रतीति न छोडिये ॥ ४ ॥ व्यापक ब्रह्ममें लीन रहो अरु सत्यकी वृत्तिसे चित्त न मोडिये । नम्रता शील दया भ्रम साहस न्याय क्षमा धृति आदिक ओडिये।कीजै दुखी नाहिं जीव कोई मनमें खल पंच विषय नहिं जोडिये । पूरण लाभ मिले हरिसों यदि प्रीति करो तो प्रतीति न छोडिये ५॥

समस्या ३३ वीं। मुरि मुसक्यानकी ललाके सौंहखानकी।

दक्खिनकी बाल डील डौलमें विशाल होत सुन्दर स्वरूपवान उरज उठानकी। कलितकपोलकटि केहरि गयन्द गति नैनकी निकाई अति चित्त हुलसानकी। दशन हँसन श्रुति नासिका रसीले बैन सैनशूल हूलहिय प्राण नुकसानकी। बानके समान तन तानके वसी है छवि मुरि मुसक्यानकी ललाके सौंह-खानकी ॥ १ ॥

ब्रजकी नवेली अलबेलिन सहेली संग करत रसीले गान कंठ सुरतानकी। कान्हके सनेहमें विहालबाल प्रातहीते कुंजनमें फिरत किशोरी वृषभानकी। बाँसुरीकी ध्वनि गति नूपुर दोउन छवि माधुरी हँसन अरुणाई मुखपानकी। प्रेममें परी है बानि सखिनकी बारबार मुरि मुसक्यानकी ललाके सौंह खानकी २॥

पश्चिमकी नारी सुकुमारी गुणवारी अति रंग रूपवान सुठि गरब गुमानकी। दाडिम दशन मृगशावक सरिस नैन कलित कपोत कंठ गान पिकतानकी। अधर कपोल श्रुतिनासिका नितंब कारे केश कुच कर सब अंग अनुमानकी। मोहनी मतंगगति साजती सुरंगपट मुरि मुसक्यानकी ललाके सौंह खानकी॥ ३॥

कंचुकी कसन कच श्यामकी डसन छवि माधुरी हँसन अरुणाई मुख पानकी। रंगकीचटक दोउ नैनकी मटक मृदु बैनकी खटक मनभाई गति तानकी। रैनकी रमन तन मैनकी दमन तिहुँ तापकी समन कारि केहरि समानकी। बार २ वचनमें बाल की परी है बानि मुरि मुसक्यानकी ललाकी सौंह खानकी॥ ४॥

पूछो कछु राजनीति धर्म कर्म मर्म कछु पूछो जीव ब्रह्म भेद पूछो बात ज्ञानकी । पूछो दृढ द्रव्य वायु पञ्च तत्व इन्द्रीदश पूछो तम सत्व रज त्रिगुण महानकी । पूछो कौन ईश कौन भोगत शरीर दुःख मैंहूं कौन कैसी जग माया अभिमानकी । कहत फतेह याके पूछिबेमें लाभ कौन मुरिमुसक्यानकी ललाके सौंह खानकी ॥ ५ ॥

समस्या ३४ वीं । मृदु मुसिक्यानमें चुराय चित्त लैगई । रामजी कहत देखो लखन सियाकी छवि वाटिकाके बीचमें लताके ओट ह्वैगई । सखिनके साथ चली जात गौरि पूजबेको दरश दिखायके दुसह दुःख दैगई । नवलकिशोरी मनमोहनी अनूप रूप कंजन कटाक्ष नैन सैन सों चितै गई । जनकदुलारी ऐसो सहज पुनीत मेरो मृदु मुसक्यानमें चुराय चित्त लैगई ॥ १ ॥

चौंकके अटापैं एक कंचनी नवल वैस केश छिटकारे ठाढी मनमें मझैगई । पीअरे वसन बर भूषन विलोकि गर मोतिनकी माल व्याल फंद में फँसे गई । चन्द्र मुखवारी मनहारी मतवारी चाल भाल भौंह भूषित दिखाय दुख देगई । तान कलगान मुखपानकी अरुण छबि मृदु मुसक्याय के चुराय चित्त लैगई ॥ २ ॥

ओढे पीत सारी जामैं बैंजनीं किनारी सोहै बारी वेसवारी प्यारी प्रेम सों पगैगई । भनत फतेह भरि भूषणके भारन

सों मंद मंद मारग गयंद गति ह्वैगई। कोमल कलित कटि केहरि कलाप केकि केश कर करक करेजे कुन्त कैगई। माधुरी हँसन द्युति दामिन दशन मृदु छबि मुसक्यान में चुराय चित्त लैगई॥ ३॥

मनहै मलीन काम क्रोधही में लीन रहै अबुध विवेक हीन लाज सब ध्वै गई। विविध विकारन में बेधित बिताई बैस बहकि बढ़ाय बैर बेलि विष वैगई। ईशहि बिसार भव बन्धन में भूलि रह्यो पाइकै कुसंग सब सुमति नशै गई। कहत फतेह ऐसो फंद में फँस्यो है तातें मृदु मुसक्यायके चुराय चित्त लैगई॥ ४॥

लैगई लुभाय लखि लोगनकी लोक लाज दामिन दमक देह दूनो दुख दैगई। दैगई दिखाय दृग दारुण दुसह दम्भ हेरत हँसीली हूल हूल हिय ह्वैगई। ह्वैगई हमारे हित हेमकी हरनहार चंचल चपल चख चलन चुभै गई। भैगई फतेह भाभरे भरि भीरनमें मृदु मुसक्यान में चुराय चित्त लैगई॥५॥

समस्या २९ वीं। दृगकी निकाई लखि मृगहू लजात हैं॥ कारे रतनारे श्वेत त्रिविध रसीले नैन, पूरित गरल मद सुधासे दिखात हैं। हेरन हरन प्रान देखके मरत केते केते महि गिरत परत झुकि जात हैं। केते देख जियत पियत प्रेम रस देखि मुख नभ मंडलके रवि शशि मातहैं। कंजनके गंजन

सुखंजनकी कौन कहै दृगकी निकाई देख मृगहू लजातहैं ॥ १ ॥

केदली कुठारी कंठ जानु सुघराई देखि केहरि कराह कटि देखि दुरजातहैं । गात अवलोकके लजाय जात जातरूप देखिके गयंद निजगतहू भुलातहै । वंदन विलोकि विधु वारिदकी ओट होत आलिन के वृन्द केश देख सकुचातहैं । दशन को देख देख दाडिम दरकि जात दृगकी निकाई लखि मृगहूं लजात हैं ॥ २ ॥

शक्ति की मयन्द गति हूलसी हँसन होत, भौंहन कमान तान भान कर अघातहैं । कुंतसे कराल कुच शुकसे कपोल कंठसारे दुखदायक भरेही यह गातहैं । बानसे विलोक नैन खगसे कटाक्ष नैन व्याकुल दिवस रैन चैनना दिखातहैं । ताहू पै फतेह से कहाओ तुम बार २ दृगकी निकाई लखि मृगहू लजातहैं ॥ ३ ॥

बारीध्वैस बदन विभूषन विराजै वेश बसन विलोकि विज्जु वारिद बिलातहैं । भोग भरी भामिनको भावत भलोही भेष भमिके भैषज्य निज भेषज भुलातहैं । मंजुल महक मृग मदकी मयंक मुख भाल मुकताहलपै मोहे मन जातहैं । अंजन बिनाही मन रंजन पियाके दोऊ दृगकी निकाई देख मृगहू लजातहैं ॥ ४ ॥

चरन २ चलि चिह्नहू बनावे महि बरन बरन भूषन सुहात है। नरन २ मन मोहत निरख नैन सरन २ में सरोज सकुचातहै। घरन २ घहरात ध्वनि नूपुरकी दरन २ दरशन दरशातहै। करन करन फहरातसी फिरत जाके दृगकी निकाई लखि मृगहू लजातहैं ॥ ५ ॥

समस्या ३६ वीं। ज्ञानी के आगे बयान गुनीको।
राम कथा हरि भक्तहि सोहत योगहि जाय हनाय धुनीको।
काव्य कला कवि को उर सोहत ज्योतिष चित्त रमै सगुनीको।
सोहत वेदहि रोग विचार निवास तपोवन श्रेष्ठ मुनीको।
त्योंही फते करिबो अति सोहत ज्ञानीके आगे बयान गुनीको ॥ १ ॥

शूरके आगे कथा रणकी नर क्रूरके आगे प्रपंच दुनीको।
सन्तहि ज्ञान विवेक सुहात असन्तहि रूप छटा तरुनीको।
सज्जनको उपकारकी बात निलज्जनको यश आपननीको ॥
त्योंहीं फते करिबो अति सोहत ज्ञानीके आगे बयान गुनीको २

समस्या ३७ वीं। कौन उपाय हिये नहिं भावे।
दम्भअनेक दिखाय छली नित झूठ विवादमें द्रव्यकमावै ॥
कोटिन पापकरें निशिवासर उत्तम जन्मको व्यर्थ गमावै ॥
कर्म अकर्म करै ठगिके शुभ कर्मकी ओर न चित्त चलावे।
अन्तमें जौन चले संग जीवके तौन उपाय हिये नाहिं भावे ॥ १ ॥

आनँदकंद दयानिधि पालक दुःख निकन्द कलेश नशावै।
आपनि भक्ति दृढायहिये मम औरके मोहसे त्याग करावै ॥
पंच विषै बसि भूलि फते निज ईश बिसार कहा सुख पावै ।
अंतमें जौन चले सँग जीवकि तौन उपाय हिये नहिं भावै २॥

**समस्या ३८ वीं ।** अंकुर उरोजनके रोजन बढै लगे । तजन लगीहै खेल मेल वैस वारिनकी नारिनकी चाल शुद्धवैन अब कढै लगे । पीतमकी प्रतिमा उर अन्तर बसाई अरु गालपै गुलाबीरंग कछुकचढै लगे । रसकी कहानिनको पूंछत सखीरिन सो कोमल उर अंतर कामबाणहू अढैलगे । कहत हर्षराम ये मयंक की कलाकी भांति अंकुर उरोजनके रोजन बढै लगे ॥ १ ॥

**समस्या ३९ वीं ।** वंशी जबै बन श्याम बजाई ।
व्योम थक्यो रविको रथ बाजिसोंधूम ध्वजा प्रगट्यो शितलाई ।
अम्बर माहि सुरासुर मोहित ह्वै करपाहनसों रह्यो छाई । कुंजन
में खग स्वस्थ सुजान भो सिंधु समीर लही शितलाई ।
शंकर हूकी समाधि गई छुटिवंशी जबै बन श्याम बजाई ॥ १ ॥
शारद मास विलास विलोकि उयो विधु पूरण मांह जुन्हाई ।
मन्द सुगंध समीर बहै रविजा रह्यो पंकजते छवि छाई ॥
जाय कलिन्दीके कूल कलोलते टेक कदम्बके डार सुहाई ।
भई ब्रजनार विहाल सुजान जू बंशी जबै बन श्याम बजाई २॥
केहरि सों कटि माह दुकूल कसे बर पीत महा छबि छाई ।
कुंडल गोल अमोल कपोल पै डोलत चित्त सो लेत चुराई ॥

यामिन मांह जुहार अकेल सो कुंज करीलनके रह्यो जाई।
सो न डरी तिय जाय मिली जहँ वंशी जबै बन श्याम बजाई ३
शब्द अचानक कान परचो हरि देखनको मनमें अकुलाई।
कानि गुरूजन की न गिनी अपने २ गृहते उठधाई॥
वेधत कंटक पांयन मों दुख झेलत मारगमें बहुताई। जाय मिली
तिय प्यारे सुजानसों वंशी जबै बन श्याम बजाई॥ ४॥
कोऊ कहै कितते यह शब्द भो कोऊ कहै किये शब्द कन्हाई।
कोऊ करै सुधि चीर की ना उर कौऊ धरै नहिं धीर दुहाई॥
काहूके लाज न काज रह्यो गृहकाहू बकै निकसै अकुलाई।
होय गई वनिता उन्मत्त सों वंशी जबै बन श्याम बजाई ५॥
बात न मानतहै पतिकी कोउ लाज बड़ेनकी शंक न आई।
गोकुलके कुलको न गिनी एक बारहिते गृहकाज भुलाई॥
श्याम सनेह सबै अटकी नटकी सुधि धारि हिये हरषाई।
धाय सुजानसों रासरची सब वंशी जबै बन श्याम बजाई ६॥

समस्या ४० वीं। शिर ओढ़नि बैंजनि पैंजनि पायन।
तुंग तने कुच भूधर से युग केहरि सी कटि खीन लखायन।
पीन नितम्ब सरोरुह पाणि मयंक सों आननहै छबि छायन॥
हाटककी पुतली, मनु नारि लखे उपमा कविके मुख आयन।
जातचली सोई आजसजै शिर ओढ़नि बैंजनि पैंजनि पायन १
कौन बिथूर दई कच कुंचित को हियहार कियो उरझायन।
पील कपोलन पै किन पांरि दई किन रूप बिगारि सुहायन॥

कौन छुड़ाय दई कुच कुंकुम को नखघात दियो कर गायन ।
सांचीसुजान सों कौन दई शिर ओढ़नि बैंजनि पैंजनि पायन२॥
अंग सुधार सुगंधनिसों कच मोतिन गूंथ लई छबि दायन ।
तुंग उरोजन पै कसि कंचुकि धारि लई मुख पान सुभायन ॥
मोहनके मनमोहन हेतु बनाय सबै विध रूप लुभायन ।
जात सुजानपै साजि अली शिर ओढ़नि बैंजनि पैंजनि पायन३
पावसके अँधियारमहा निशि पौन झकोरतहैं चहुँ घायन ।
कीच मचो मगहै तेहिपै अपनो निशिमें जहँ गात लखायन ॥
या अभिसारमें काज शृंगारके कौन लखात अहै ठकुरायन ।
सादे चले न सजे यहिते शिर ओढ़नि बैंजनि पैंजनि पायन ४॥
क्यों इतनो बतराति गँवारन मानतिहै गुरु लोग सिखायन ।
राति दिना झगरा पियसों करि मान रहे मुखके अनखायन ॥
तू समझे सिख मोर नहीं कह अन्त सुजान किसौं पछितायन।
मारिकै छोरिनले तुम्हरो शिर ओढ़नि बैंजनि पैंजनि पायन ५
छैल बने सब गैल में घूमत राय कहावतहो चहुँ घायन ।
प्रेमकी बात करैं नित आय टका कहुं गांठ खुले न सुभायन ॥
आजु सुजानकी सौंह परयौ कर बात कही झुठजो बहुतायन॥
लै उखारि लिहों न तुला शिरओढ़नि बैंजनि पैंजनि पायन ६

समस्या ४१ वीं । मत मानानि मानु मनावन ते ।
तोहिंसो हितकी इक बात कहों कहियो ननिजै मन भावनते ॥
तब नाह सुजान ज गोपिन ते अहे प्रीति किये पिय गावनते ॥

अब युक्ति बतावत नीक भई मुख फेरिकै बैठियो आवनते।
जबलों कारि सौंह न ताहि तजै मति मानानि मानु मनावन ते १॥
तबलों न कियो कछु कान अरी बहु भाँति भटू समझावनते।
अब बूझि परी रघुबीर भलै जब सौतिनि ताव बितावनते।
यह मान मेरो सिख गांदि करो अब आपहि आवन बावनते।
जबलों पदपै न गिरै तबलों मति मानानि मानुमनावनते ॥ २॥
तुम्हरे हितकी इक कैकयी जू हम बात सुनी तिय गावनते ॥
कल रामहि राज्य समर्पहिंगे दशरस्थ सुजान जू चावनते ॥
तुम मान के बैठ भरत्थ लिये बन राम कहो मनभावनते।
जबलों न स्वीकार करें तबलों मति मानानि मानि मनावनते ३॥

समस्या ४२ वीं। पिय जाय विदेशमें छाय रहे।

जिनके हित लोककी लाज तजी घर बाहरके दुरबैन सहे॥
सुनते नाहिं बैन सुधारसके उर जातहै आग वियोग दहे।
नित प्रेम विलास में पायो महासुख सो अब जात न बैन कहे।
मन व्याकुलहै अति कैसो जियों हरि जाय विदेशमें छाय रहे १॥
अबतो नहिं खान औ पान सुहाय न गेहके कामको चित्त चहे।
मुखकी छबि को नहिं ध्यान टरै उरकी विरहाग्नि अतीव दहे॥
कवि लक्ष्मणका तकसीर करी कबहूं नाहिं बैन कुबैन सहे।
हमतो हैं अभागिन जो तजके पिय जाय विदेशमें छायरहे २॥
आयो बसन्त सुहावन लागत मोरवा चहुँओरसे बोल रहेहैं।

डोले समीर कलोलति कामिन कुंज लतासों लता लपटे हैं ॥
योगी यती औ सती तपसी सबही विरहानल आय लरेहैं ।
मोसों रहो नाहिं जाय सखी हरि जाय विदेशमें छाय रहेहैं॥ ३॥

समस्या ४३ वीं । फाटि गयो पै दरार न आई ।

छैल छबीले कह्यो चलिबो परदेश उये दिन नाथ ललाई ॥
सो सुनि बैन न चैन रह्यो सब रोवत रोवत रैन गँवाई ।
बहुत विचार गहे उपचार रहें न सम्हार गिरी मुरझाई ॥
प्रात भये पह फाटतही हिय फाटि गयो पै दरार न आई॥ १॥

जब कृष्णको लेन अक्रूर गये सिगरे नर नारि गये बिलखाई । गोपिन त्राह कियो ब्रजमें अरु नंदजी रोहिणि हाय मचाई ॥ भाषत गंगापरसाद यही यशुदाजी हरिसों गई लपटाई । जान वियोग दुहूंसुतको हिय फाटि गयो पै दरार न आई ॥ २॥

सखनि सन्त सुपूत शिरोमणि मात पिताकी करी सेवकाई ।
नारि बिसारि चले वनको सज कांवरि अन्धन अंध चढाई ॥
नीरके तीर लख्यो अवधेश हन्यो शर खैंच मृगाउर लाई ।
दोहुनको सुतके मरते हिय फाटि गयो पै दरार न आई॥ ३॥

जादिनते चरचा मैं सुनी तुम कान्ह भये सौतन वश जाई ।
तादिनते पिअरो भयो गात सो रैनि दिना सब रोवत जाई ॥
भोजन पानहूं दीन्ह्यो बिसारि भला टुक प्यारे बिलोकहु आई।

और कहा कहिये तुमसों हिय फाटि गयो पै दरार न आई ॥ ४ ॥

संगी सखानके संगमें सांवरे खेलत खेलत भानुजा जाई। छिपे श्रीदामें करी जमलेश सो कंदुक बार परी तहँ जाई ॥ भागत सों बरजोरी करी सुगोपाल कदम्ब चढे अतुराई। कूदे कलिन्द्री की धारहि माहिं जल फाटिगयो पै दरार न आई ॥ ५ ॥

कालिका धाय मिली जिनको गुरु लोगन में कुल कानि गँवाई। अंक भयो निरशंक भटू सुलटू है लला सँग प्रीति लगाई॥ एकहि संग रह्यो विधिके रसरंग तरंग लह्यो सुखदाई। ताहरिके बिछुरे छतियां अलि फाटि गई पै दरार न आई ६॥

ऐसे नरेश रहे अवधेश सुरेशहुकी जिन कीन्ह बड़ाई। और महत्व कहां लों कहों करुणानिधिसे सुत गोद खिलाई॥ ते मतिमंद छली तिरिया रघुनन्दनको वन पेलि पठाई। रामसों बेटा बिछोहतही हिय फाटिगयो पै दरार न आई ॥ ७॥

मो मन पंक समान रह्यो पिय अंक लगे दिन रात बिताई। सो पय प्रीतम के बिछरे सजनी यह होइ गयो पय नाई ॥ पंक कटे है जात दरार सुशील लखो इहि मूरखताई। जैसो को तैसो लखात अभों हहा फाटिगयो पै दरार न आई८॥ खारमें जन्म दियो मुँहतीत को जाने विरंचहि की निपुनाई। होय जयंती कृष्ण जबै तब ताहि को ल्यायके काज चलाई॥

नैन लख्यो न तऊ प्रभुको अरु नाहिं गई मुखकी करुआई। शोचत २ हीय फटो पै ऊपर नेक दरार न आई ॥ ९ ॥

समस्या ४४ वीं । हमें आपने कामते काम अहै कुलके कुल नाम धरोतो धरो ।

अमला हम लेतहैं घूस सदा बिन घूसके बात न कोई करो । चहो मीत गरीब कै आपने हो पर सामने से रहो दूर खरो ॥ सुनिकै यहि बात हमारी अर्जी मनमें तुम चाहे जरोकै बरो । हमें आपने कामते काम अहै कुलके कुल नाम धरोतो धरो ॥ १ ॥ अबतो हम धत्त समाजी भये शिकवा जग मेरी करो तो करो ॥ नित ढालि है जाय शराब मठी कहिहैं सब लोगकि खोटोखरो । न पुराणकी मानिहै बात कछू चहै पूजक मूर्त्ति लरो तो लरो ॥ हमें आपने कामते काम अहै कुलके कुल नाम धरो तो धरो ॥ २ ॥

तिय संग सदा हम चैन करैं पितु मात औ बंधु मरो तो मरो । नित लूटके लावत कूटिके खात चहै कोऊ देखि जरोके बरो ॥ नहिं धर्म अधर्म से काम कछू डर स्वर्गहू नर्कको नाहिं परो । हमें आपने काम ते काम अहै कुलके कुल नाम धरो तो धरो ॥ ३ ॥

निज वक्तृता आपने पास रखो इहिते कछु काम हमैं न परो ॥ जो हुतो विधिको करनी सो कियो अरु जो उहि भावै भले सोकरो । धंन संपति की परवाह नहीं घर गांव

गिरांत्र बसो उजरो ॥ यह नाक पुरानी हमारी रहै कुलके कुल नाम धरो तो धरो ॥ ४ ॥

अलि व्यर्थ सबै समुझावतीहो भय काहूकोहै नहिं नेकुपरो। सब आपनी आपनि बातनको मुखै खोलके बाहर नाहिं करो॥ लखि चाल हमारी बुरी अतिही मनमाहिं जरोके टरोके बरो। हमे आपने कामते काम अहै कुलके कुल नाम धरो तो धरो॥५॥

अबतो बदनाम भई ब्रजमें घरहाई चबाव करो तो करो। अपकीरति होहु भले हरिचंद जू सास जेठानी लरों तो लरो॥ नित देखतो है वह रूप मनोहर लाज पै गाज परो तो परो। मोहिं आपने कामसों काम अरी,कुलके कुलनाम धरो तो धरो६

समस्या ४९ वीं। बजनी घुँघुरू रजनी उजियारी। तू समझावति है हितकी अरु मैतो विचारतिहौं हितकारी॥ मोहनसों चलिके मिलिये हियकी दुबिधा कुल कानि बिसारी याहि विचार हिये करिकै मिलबे हितहै हम कीन्ह तयारी। पै किमिके चलिये सजनी बजनी घुँघरू रजनी उजियारी॥१॥

दाहिने जागति सासु अहै दिशि बाम जगे ननदी बँजमारी। सामुहे धामके पौरहिं माहिं जेठानि परी अहै मौन विचारी॥ क्योंघबराति सुजान किसों धरि द्वैकलों धीर धरो बनवारी। जाँयगी जानि सबै वजिहैं बजनी घुँघरू रजनी उजियारी॥२॥

कुन्दन क्रीट धरे शिरपै सखि मोरपँखा तेहिपै छविवारी। सोहत त्यों कटि पीत दुकूल सुजान धरें तेहिपै बँसियारी॥

कुंज करीलनमें यमुनातट बेगहि आजु लखें चल प्यारी ।
नाचत लाल धरे पगमें बजनी घुँघरू रजनी उजियारी ॥ ३॥
केसरसों करि मंजन खंजनसे दृग अंजन रेख सँवारी ।
केसरिसो कटि मांह सुजान कसौ तिमि केसरिया रंग सारी ॥
केश सुधारि सुगंधनि सों शुचि मोतिन मांग भरी अति न्यारी ।
तापर साज भई सजनी बजनी घुँघरू रजनी उजियारी ॥४॥
गोकुलके कुलको तजिकै हरि जादिनते मथुराको सिधारी ।
तादिनते पठयो कछु हाल न लाल सबै सुधि मोरि विसारी॥
भूषण भौन सुजान सुहात न आये हिये सुधि कुंजविहारी ।
शालतहै नट शालसों ये बजनी घुँघरू रजनी उजियारी ॥५॥
पूरण चन्द रह्यो छवि जादिन शारद यामिनमें मनहारी ।
त्योंहीं सुजान जू राम उमंगमें जादिन बाजतथी करतारी ॥
जादिन भानु लली गल बाँहदे नाचतथे वन कुंजविहारी ।
वाहि दिना वद दीन्ह भुजा बजनी घुँघरू रजनी उजियारी ६
सोइ रही हैं चहूंदिशपे ननदी औ जिठानी सखी सँगवारी।
वीरन बैठे हैं द्वारहिपै करिकै यह सामुहे सेज तयारी ॥
तापर आई बुलावनको तुम कुंजनमें जहँ कुंजविहारी ।
हाय मैं कैसी करों सजनी बजनी घुँघरू रजनी उजियारी॥७॥

समस्या ४६ वीं । देह धरेको यहै फल भाई ॥

नैन लखैं जग सांवरेही मुख गान करै तिहि नाम सुनाई ।
केलि कथानि सुनै श्रुतिते पगते चलिकै ब्रजमें रहे छाई ॥

कोउ कछू कहै कैसहिके अपने जियमें करे भेद न राई।
सन्त सुजान बखान करैं बस देह धरेको यहै फल भाई॥ १॥
जायलखे दृग केलिको धाम जहां मनमोहन रास मचाई।
त्योंहीं सुजान जू कुंज करीलनमें बसिकै रटे नाम कन्हाई॥
अंकनि भेटे कदम्बनको यमुना जलमों करै न्हान सुहाई।
लोटो करै ब्रजके रजमें बस देह धरेको यहै फल भाई॥२॥
श्रौन सुनै हरिकेलि कथा दृगमें रहे सांवरो रूप समाई।
शीश नवै मुरलीधरको चरणामृत पान करै हरषाई॥
खेलत खात उघात जम्हात सुजान सबै छिन चित्त लगाई।
गान करै यदुनन्दनको जग देह धरेको यहै फल भाई॥ ३॥
द्वै अधरा अधरे विधकै अधरामृत पान करै हरषाई।
त्योंहिं सुजान उमंग हिये करि केलि कथा प्रगटे बहुताई॥
चुम्बन चन्द मुखौ मुखके पर्यंकमें जौलों रहे लपटाई।
न्यारो न अंकते होय छिनो बस देह धरेको यहै फल भाई॥४॥
कानन जातसियावरको लखि लक्ष्मण बोलि उठे हरषाई।
तात विहाय हमें कित जात कहा हम नाथ करी कुटलाई॥
मातु पिता सुख सम्पति आदि सबै तुम्हरे बिन है दुखदाई।
प्रेम रहै तुम्हरे पद कंजमों देह धरेको यहै फल भाई॥ ५॥
आनन पूरण चन्द्र समान सजेवर कुन्दसों गात निकाई।
ग्रीव कपोत से सुन्दर राजत चाल लखे गज जात लजाई॥
श्रीफलसे कुच तुंग दोऊ कच ते कटि खीन महाछबि छाई।

या विधके तिय अंक लगैं बस देह धरेको यहै फल भाई ॥ ६ ॥
यातनु सुन्दर पाय अरे मन मूरख क्यों न भजै रघुराई ।
जासु सनेह कियो गणिका गज गीध अजामिल ने गति पाई ॥
और अधीनकी कौन कथा जग जाने तरे सदनासे कसाई ।
नाम न भूलो छिनो मथुरा नर देह धरेको यहै फल भाई ॥ ७ ॥

समस्या ४७ वीं । केहि कारण कांप उठी धरती ॥

नाश भयो सतधर्म विचार गऊकी पुकार हियो हरती ।
मानत कोउ न वेदकी रीति अनीति कुनीति नहीं टरती ॥
त्याग दियो निज धर्म सुधर्मिन सैनकी शाह करै भरती ।
शंकर रूसकी त्रास बढ़ी यहिकारण कांप उठी धरती ॥ १ ॥
श्रीयुत साहेब एलगिन लार्डकी आमद देख सती डरती ।
एकट कोउ न पास करे द्विज गायनकी करै कौन गती ॥
भारतवासी प्रजानके मालिक हिंदमें आप महान गती ।
धर्ममें बाधा न डारै कभौं इहि कारण कांप उठी धरती ॥ २ ॥

समस्या ४८ वीं । नन्दके अजिरमें खेलत नंदलाल हैं ॥

जाको शेश शंकर सुरेश सनकादि अज नारद मुनीश ध्यान ध्यावैं तिहुँकाल हैं । करत विविध जाप यज्ञ जागरण तप जाके हेतु मुनि जन सहत कशाल हैं ॥ जाकी शुचि महिमा बखानत दिवस निशि नेतिके पुकारयो श्रुतिबंद सुख जालहैं । जायकै लखै न किन रूप धै सुजान सोई नन्दके अजिरमें खेलत नंदलाल हैं ॥ १ ॥

आसन चढाय कुश कासनपै आसनके कारिक उपासन क्यों सहत कशालहैं। ज्वलित हुताशनमें दाहे वपु वादिकाहे होकर दिगम्बर औ ओढें मृगछाल हैं॥ घूमि २ तीरथ क्यों सहिये सजान दुख इत उत वादि वितइये काहे काल हैं। जाय विनु श्रमहि लखे न किन वाको जोय नन्दके अजिरमें खेलत नंदलाल हैं॥ २॥

पिंगल दुकूल कटि मुकुट जटित शीश चौतनि चटकडर मोतिनके माल हैं। चन्दन तिलक भाल लकुट भुजा विशाल लिये हैं खुशाल बोल बोलत रसाल हैं। चकई चटक चारु फेरत अनूप कर लटू लखे लाल लटू भई ब्रजवाल हैं। हौं तो लखिआई निज नैननते याही बिध नन्दके अजिरमें खेलत नंदलाल हैं॥ ३॥

माखनके चोरिबोको हियमें विचारि करि पैठो एक ग्वालिनके धाममें गुपाल हैं। सुकवि सुजान तेहि औसर अचानके चुरावत हरीको लखि लीन्हो ब्रजबाल हैं॥ ह्वैकै चुप चाप डारि दारिके कपाट चली यशुदाको लाइके दिखैबेको यह हाल हैं। ऐसो हिय शोच नन्दधाम उतजाय तोपै नन्दके अजिरमें खेलत नन्दलाल हैं॥ ४॥

**समस्या ४९ वीं। मकरन्दके कन्द भुलान्यो अली॥**

तनु श्याम सजे पटपीत "फते" मुरलीध्वनि सों लियो चित्त छली। छबि सौरभ पुष्प परागनकी मन रम्य प्रफुल्लित मंजु

कली ॥ मधु अंध भयो मृदु मन्द सुगन्धन मत्त कियो मनमोह बली । रस लीन प्रवीनताछीन भई मकरन्दके फन्द भुलान्यो अली ॥ १ ॥

समस्या ५० वीं । नाचत कुंजमें कुंजबिहारी ॥

शंकरसे सुर सिद्ध सबै जेहि भेद न पावत ध्यान मँझारी ।
शेष सुरेश थके भनिवेद अजो जिनके कछू वार न पारी ॥
जाहि सदा षट चारि दसाठ सुहारि हिये केहि नेति पुकारी ।
प्रेमके डोर सुजान बँधे सोइ नाचत कुंजमें कुंजबिहारी ॥ १ ॥

मंडित कुण्डल कुन्दनके श्रुति चन्द्रकला युग ज्यों उजियारी । तैसो सुजान कसे पटपीतहिं मोरपँखा शिर है छबिवारी ॥ सो लखिके युवती निरके मनमत्त ह्वै गावत दैकरतारी । बांह धरे वृषभानु सुतागर नाचत कुंजमें कुंजबिहारी ॥ २ ॥

पूरण चन्द्रकला निकस्यो नभ शारद यामिनिमें मनहारी ।
होत सुजान हुलास हिये करि रास प्रकाश कियो बनवारी ॥
सो सुनिकै श्रुतिते बनिता उलटे पुलटे अँग भूषण धारी ।
धाय मिली ललना हरिसों जहँ नाचत कुंजमें कुंजबिहारी ३ ॥

बाजत ताल मृदंग उपंग पखावुज बीण महा मनहारी ।
छाजत छत्र छपाकरके क्षिति लाजत कोटिक मैन निहारी ॥
राजति मंडिल नारिनके मधि भ्राजत भानुलली बनवारी ।
काज तकै मत जाय लखै इमि नाचत कुंजमें कुंजबिहारी ॥ ४ ॥

क्रूर अक्रूर भयो व्रजके व्रजराजको ले मथुराको सिधारी ।
तादिनते दुख दूनो बढ़ो कछु बूझ परे न भूल्यो सुधि सारी ॥
प्यारे सुजान वियोगहुपै उर आवत भाषिये बात हमारी ।
भानुसुता गर बांह धरे अजों नाचत कुंजमें कुंजबिहारी ॥ ५ ॥

जाहिन जान सकैं चतुरानन ध्यानहूं में न लहैं त्रिपुरारी ।
वेदहुभेद न जासु लहैं सर्वज्ञ अनन्त कोटि पुरारी ॥
रास विलास सभै यमुना तट संग लिये बहु ग्वारि गँवारी ।
प्रेम भरे गरे हाथ धरे सोइ नाचत कुंजमें कुंजबिहारी ॥ ६ ॥

जिन बीन बजाय बुलाय सबै छतियां सों लगाय २ निहारी ।
अपने कर भूषण वस्त्र सुधारत अंजन आंजि शृँगार सँवारी ॥
तिन कूबरिके वश ह्वै सजनी ब्रजकी सब ग्वारि गँवारि बिसारी ।
सुध आवतही फटजात हिया जब नाचत कुंजमें कुंजबिहारी ७ ॥

समस्या ५१ वीं । बालिका वियोग नँदलालके विहाल है। लेवाय कृष्णको गये अक्रूर साथले बुलाय हाय भूप कंसधौं करेंगो कौन हालहै । समूह यातुधान जोरि चित्त ठानि मारिबो वृथा विसाह बैरको करी महा कुचालहै । सखी-दशा इतै फते सुनी न जात कानदे बडी प्रचण्ड गातमें तरंग प्रेम ज्वालहै। बिसारि खान पान नींद ध्यानही किये हिये सुबालिका वियोग नंदलाल के विहालहै ॥ १ ॥

कहाय श्याम राधिका भयेहैं कृष्ण कूबरी नशाय लोक-लाज कौन ये गही कुचालहै । बडी तरंग प्रेमकी अधीर ह्वै

कहै फते दहै शरीर को ऊधो संदेश योग ज्वालहै ॥ रमाय भस्म अंगमें रँगाय वस्त्र योगनी फिरेंगी द्वार २ जो बनेगो कौन हालहै। हृदय अनंद मालिका फँसाय मोह जालिका सुबालिका वियोग नंदलालके विहाल है ॥ २ ॥

पड़ी कहराती घबराती रहे भवन माहिं बूझ्यो नहीं जाहि करदियो रहे गालहै । भूषन बसन औसनकी न चाह कछू दिनों दिन पीरो मुख में जानू बशकालहै ॥ औषधि खिलाऊं की बुलाऊं कोऊ पंडितको खंडित करे दुखको विचार कर फालहै । देख भालकै के हर्षरामने सुनायो बैन सु बालिका वियोग नंदलालके विहालहै ॥ ३ ॥

समस्या ८२ वीं । पै तेरे एकौ अंगना ॥

सुहायो प्रीति अंगना, सनेहकी तरंगना, सुभाव की उमंगना कियो प्रभुहिं अपंगना। भईहै मति भंगना, पियेहै कछु भंगना, कोऊ डरयो भुजंगना जो ये तजे कुसंगना । "फते" है कवि गंगना, जो लावे तुक भंगना, जो होत्यो सतसंगना तो आत्यो ऐसो ढंगना । न देखे ग्वाल अगंना, जो चाहे देव अंगना सो ठाढे तेरे अंगना पै तेरे एको अंगना ॥ १ ॥

समस्या ८३ वीं । केहि कारण चन्द्र पीपीलन खायो ॥

डोलत पंथ वृथा मरिजात सबै मिलिके इक मंत्र उपायो । और उपाय न सूझे कछू चलि पीवें पियूष मिले नियरायो ॥ गंग दयाल सदाशिवजी सबसों यह आकर सों दरशायो ।

जीवन आश विचारि हियो यहि कारण चन्द्र पिपीलन खायो ॥ १ ॥

शिव व्याह मुहूरत आयो जबै तबहीं गिरिजा यह बन सुनायो । द्वै नर संग न भौंर फिरों अह नाथ ललाटपै चन्द्र बसायो ॥ बातसुने तज भूमि धरे रस लोभ पिपीलन चाट चबायो । महावीर सती सत नामरहै इहि कारण चन्द्र पिपीलन खायो ॥ २ ॥

बैठि अलीगण आपसमें बतरात रहीं बहु बात सुहाया । ताहि समै इक नारि नवेली भरी मुद जोबन जाति लखायो॥ देखि सुशील खुले पट घूँघट आनन शीतला दाग बुझायो । पूंछि उठीं इकसों इक यों केहि कारण चन्द्र पिपीलन खायो ३॥

आनन नासिका गोल कपोल त्यों अमृतसों अधरा लपटायो।हैं सबमें वे मिठास भरे मधु जासु मिठोपन जात लजायो॥ कौन न चाहत पावनको तिहि काहि सुशील नहीं जग भायो । दाग न शीतलाकोहै मनो. मधुकारण चन्द्र पिपीलन खायो ॥ ४ ॥

वैद्यक भावप्रकाशमें दीखहै इन्दुकी संज्ञा कपूरहि खायो । पागमें डारि सुगंधिके हेतु बनावत मोद करें मन भायो ॥ शर्कराके हित चींटीं चलीं गंगाप्रसाद विचारि सुनायो । वन्दकी वृन्द लखी चखने तेहि कारण चन्द्र पिपीलन खायो५

एक समय पद्मासन मारि सो बैठ सदाशिव ध्यान लगायो ।
सोहत सुन्दर व्याल गरे पुनि मस्तक चन्द्र औ गंग सुहायो ॥
उज्ज्वल अंग बिभूति रमाय सो खेचरी साधनमें मनलायो ।
बैठे महेश समाधि लगाय यहि कारण चन्द्र पिपीलन खायो ॥
॥ ६ ॥ अंक मयंक मुखी सुतको धर व्योम छयो निशिनाथ दिखायो । छैल छबीले लला हरखें निरखें शशिमोदक मात बतायो ॥ छाय गयो घन आय तबै न लखाय परचो तबहीं बिलखायो । माय मनावत रोवतरे केहि कारण चन्द्र पिपीलन खायो ॥ ७ ॥ वेदनमें तो नहीं गम है पै पुराणन माहिं कहूं न सुनायो । पूंछतहौं जिहि पंडितसे करिक्रोध कहै यह झूठ बनायो ॥ मित्र यह कैसे कवित्त बनै गंगा परसादको वेगचितायो । कैसे वृथा हम झूठ लिखैं केहि कारण चन्द्र पिपीलन खायो ॥ ८ ॥

समस्या ५४ वीं । हमना बरती तुम्हेंको बरतो ॥
शमशान विभूति बताओ भला करले निजको तनुमें भरतो । भँगिया मलि कौन छकातो दमोदर कौन कही मनकी करतो ॥ अवलोकतो कौन भयावनो भेष नहीं अपने मनमें डरतो । गिरिजा शिवसों यहि भाँति कहैं हमना बरतीं तुम्हें को बरतो ॥ १ ॥
बरतो नहिं कोउ तुम्हें कबहूं कर पीठ कृपालु जुपै मरतो ॥ मरतो तिम कौन अहीशन शीशन शीश लखे मति नाहरतो । हरतो श्रम कौन दमोदर जू सुखमा दिशि बाम भले

भरतो ॥ भरतो नहिं काहूको होत अजों हमना बरती तुम्हें को बरतो ॥ २ ॥

वृषयान पै खंप्पर खंग लिये अर्द्धांग भये प्रगको धरतो। डमरू तिरशूल जटा अहि देख पिशाचनी संगतिको करतो ॥ बसि कानन कौन सदैव फते चित चिंतित है दुखको भरतो। गिरिराजसुता कहै शंकर सों हम ना बरती तुम्हेंको बरतो ३॥

समस्या ९९ वीं। दुहुँ लोकनमें यश छावतु है ॥

जन्मे जन्मे वह अन्त मरे एक धर्महीं संगमें जावतु है। धन सम्पति मीत सखा परिवार तिया घर काम न आवतु है ॥ धन्य वही नित धर्म करै सिय राम सों नेह लगावतु है। सुख पावत है सब भाँतिन सों दुहुँ लोकनमें यश छावतु है १ ॥

धन सो धन पाय जो धर्म करै अभिमान नहीं जिय लावतु है। धन जो परिके उपकारहिंमें लगि वैस सदाही बितावत है ॥ धन सो जो करै सतसंग सदा रघुनन्दनको गुण गावतु है। सुख होत महा अस लोगनको दुहुँ लोकनमें यश छावतु है ॥ २ ॥

सदाहि धन कोटि कमाई करे पर धर्म नहीं जो कमावतु है। वह अंत समय अकुलात महा घबरावतु है पछतावतु है॥ धन अन्त न आवत काम कछू इक धर्महीं संगमें जावतु है। परलोक बने नरलोक बने दोहुँ लोकनमें यश छावतु है ३ ॥

उपकार दया क्षमा शीलरखे रघुनन्दनको गुण गावतु है। नहिं भूलहूं पांव कुपंथ धरै परकाज देह लगावतु है ॥

अभिमान न लावत है कबहूं उर पापिनको डरपावतुहै। अस लोगनको सब धन्य कहैं दुहुँ लोकनमें यश छावतुहै ॥४॥

कारिकै रघुनन्दनको गुणगान जो आपुन जन्म बितावतु है। नाहिं पावत है दुख लेश कभौं भव शूल समूल नशावतु है॥ डरनेक नहीं यमदूतनको तेहि अन्त समय दरशावतु है। नर देह सबै धन धन्य भनै दुहुँ लोकनमें यश छावतु है ॥ ५ ॥

तनुसों परको उपकार करै मनसों हरि ध्यान लगावतु है।
दृग सों हरिमूरतको निरखे पग तीरथ तीरथ जावतु है ॥
रघुनाथ कथा नित श्रवण सुने रसना हरिनाम रटावतु है ।
धन पाइके धर्म करै तिहको दुहुँ लोकनमें यश छावतु है ॥६॥

मुख सोहत है हरिनाम लिये कर दान दिये भल गावतुहै।
तनु सोहत है उपकार किये पग सोहत तीरथ जावतु है ॥
सुत सोहत मानत मात पिता धन खर्चत धर्म्म सुहावतु है ।
त्रियसोह सुशीलपती व्रततें दुहुँ लोकनमें यश छावतु है ॥७॥

नित जो हरिको गुणगावत है मन योग समाधि लगावतु है। ताजि मोह मया गृहिनी गृहको बसि कानन वैस बितावतु है॥ निजको न जनावत काहुहसे हर भांतिनहीं जो छिपा-वतु है। तऊ केवडा फूल सुवास लओ दुहुँ लोकनमें यश छावतु है ॥ ८ ॥ वन वाटिका जो न लगावत है सर कूपको जो न खनावतुहै। पुनि मंदिर जो न बनावतहैं धनदान न जो

न लुटावतु है ॥ तपसी बन खाक रमाय तनैं कहुँ तीरथ जौन न जावतु है। तेहु कोकाराम भजेहू नहीं दुहुँ लोकनमें यश छावतु है ॥ ९ ॥

उपकार समान न धर्म कछू जगमोहिं इको दरशावतुहै। यह ज्ञान सुजान दयानिधि कान्ह पै दीन विनय पहुँचावतु है ॥ अब कान्ह करो न बिलम्ब करो प्रभू जीव महा घबरावतु है। न सुशील किये बिनु दीन दया दुहुँ लोकन में यश छावतु है ॥ १० ॥

समस्या ५६ वीं। केहि कारण भारत गारदभा ॥
वेद पुराणको जाने नहीं पितु मातु को यार निरादर भा।
पति छोड़कै गैर करैं दुहिता द्विज जातको काम सबैरंदभा ॥
ठग चोर चंडाल फिरें बहुते समताके नहीं कोइ शारदभा।
भगवानदास कहैं समझाय यहि कारण भारत गारदभा ॥ १ ॥

विद्या न पढी बड़ी फूट बढी अरु गाय कसाइन मारत भा।
निज देशकी वस्तु नहीं प्रियहैं उपदेशक नित्त पुकारक भा ॥
दस्तकारी विचारी सिधारी नहीं द्विज लाल दुलारे उचारत भा।
व्यवपार बिसार दई किरषी यहि कारण भारत गारद भा ॥ २ ॥

फूटको बीज बयो सबदेश अरु झूठको बास सबै घर भा।
जात कुजातकी पूंछ रही नहीं राज्य से एक सभी जगभा ॥
कुल पद्धति छूटिगई सबते जब इंगलिश भानु प्रकासितभा।
निजउद्यम रीति व्यवपार तज्यो यहि कारण भारत गारदभा ३

समस्या ५७ वीं । लागि जो जाय तो कीजे कहा सखि ये अँखियाँ रिझवार हमारी ।
सुन्दर गोल कपोलन पै अनमोल सो कुंडल डोलन प्यारी ॥
हो हलके द्युति मोहनकी झलकैं सुथरी अलकैं घुँघरारी ।
वा मुसक्यान विलोकतही कुलकान सबै तजि होत बिदारी ॥
लागि जो जाय तो कीजे कहा सखि ये अँखियां रिझवार हमारी ॥ १ ॥ है अति भीत चवाइनको हँसिहै अरि पापिनदै करतारी।
लाज गई ब्रंजलाल विलोकत आजुलों मैं कुलकान सँभारी ॥
आवत जात सदा यहि गैल सों छैल छबील न कुंजबिहारी ।
लागि जो जाय तो कीजेकहा सखिये अँखियाँ रिझवार हमारी २

देत सदा सिख तू सजनी अरु मैंहूं विचारत हौं हितकारी।
मान किये गुणमान कहैं सनमान बढ़ै फिर ह्वै हितभारी ॥
मोहनी मूरति मोहनकी अवलोकन लोक रिझावन हारी ।ला-
गि जो जाय तो कीजे कहा सखि ये अँखिया रिझवार हमारी ३

समस्या ५८ वीं । यह पाखें पतिव्रत ताखें धरो ।
ऋतु पावसं आयगो भागनते संगलालके कुंजनमें विहरो ।
नहिं पाइहो औसर और जुवत्व कहा अब लाज लजाय मरो॥
गुरु लोग औ चोंच दहाइन सों बिरथा केहि कारण वीर डरो।
चलिचाखें सुधा अभिलाषें हिये यहि पाखें पतिव्रत ताखेंधरो॥ १

यह सावन शोक नशावन है मनभावन यामें न लाज करो।
यमुनापै चलो सो सबै मिलिकै अलगाय बजायके पीर हरो ॥

इमि भाषतहै हरिचंद पिया अहो लाड़िली यामें न धीर धरो।
चलि झूलो झुलाओ झुकोउझको यहि पाखें पतिव्रत ताखें धरो।
लीने अबीर भरे पिचका रसखानि खरो बहु भाय भरोज॥
मारसे गोप कुमारसे दीखत ध्यान टरो न टरो न टरोजू॥
पूरब पुण्य न हाथ परयो तुम राज करो उठि काज करोजू।
ताहि सरो लखि लाखन्जरो यहि पाखें पतिव्रत ताखें धरोजू ३

समस्या ८९ वीं। लपटाने दोऊ पटताने परे हैं॥
हास विलास बढाय भली विध चुम्बन भांति अनेक करेहैं।
प्रेम प्रतीतिकी बातनको कहि प्यारे उरोजन हाथ धरे हैं॥
रीति रची विपरीति आनन्दित प्यारी विषयके सुहीय हरे हैं।
शंकर खेत्ज मनोज विथा लपटाने दोऊ पटताने परे हैं॥१॥

मैं अरु मेरी प्रिया निज रूपके प्रेम समुद्रमें साने परे हैं।
रंचक चाह नहीं चितमें रहे आनँदके उर आने परे हैं॥
धीरज तासु बिछोना कियो और तपकी चादर माने परे हैं।
शंकर आतम सुरत लिये लपिटाने दोऊ पटताने परे हैं॥२॥

राधिका माधव दोऊ मिले सो प्रेमके पंथ पगाने परे हैं।
रति रंग तरंग कियो सुखसों नये नेहमें यो रस साने परे हैं॥
रामनरायण त्यो मनुहार विहार सो हार थकाने परे हैं।
वरी चारिक घोस चढो अबलों लपटाने दोऊ पटताने परे हैं ३

कामकलाकी उमंगनसों रसरंग तरंग सुमंजु भरे हैं।
चूमिकै गोल कपोलनको करकंज उरोजन हाथ धरे हैं॥

छाकि सुधा मधुराधुरको कवि लालजी चारु बिनोद भरे हैं ।
"सी" कर सेजमें शीत समय लपटाने दोऊ पटताने परे हैं ४॥

समस्या ६० वीं । मनोजके हाथ हवाले परी ॥

जब चौगुन चाह तरंग बढी नहिं जात हिये बिच धीर धरी ।
यह दुर्बल देह भई सिगरी बिरहानलमें अब जात जरी ॥
लखि व्याकुलता मम ऐ सजनी नाहिं कोउ उपाय बतावे अरी ।
अजहूं नहीं प्रीतम आयो फतेह मनोजके हाथ हवाले परी ॥ १ ॥
पहिले ही संभार कियो न सखी सखियानके सीखके जाले परी।
रसियाकी सुनी बँसिया जबते तबते भ्रमनाके भ्रमाले परी ॥
कहि सांची कही सिवकंठ सुजान सुजानके तानके पाले परी।
मनमाने न रोज रही समुझाय मनोजके हाथ हवाले परी ॥२॥
पति प्रीतिके भारन जात उतै मतिके दुख भारन साले परी ।
मुख बातते होती मलीन सदा सोई मूरति पौनके पाले परी ॥
द्विज देव अहो करतार कछू करतूति न रावरे आले परी ।
यह नाहक गोरी गुलाबकलीसी मनोजके हाथ हवाले परी३॥

समस्या ६१ वीं । है ऋतुराज बसंतको आवन ॥

आवनकी कर औध गयो पर आये नहीं अजहूं मनभावन ।
भावन एकहू काज सखी बिन पीव रही जियरा तरसावन ॥
सावनहीसे वियोग भये पपिहा रहो पीव को शब्द सुनावन ।
नावन औधिकी और फते यहहै ऋतुराज बसंतको आवन १॥
कोकिल केकी चकोर सुकीरनकी बलगै बरबोल सुहावन।
वस्तु सजे सरदारखरे द्रुम सूहे बिचित्र सुरंग सुनावन ॥

मंत्री रतीस समीर सदूत पठाय प्रजैं बल लागे जनावन।
पूरी छटा क्षितिछाई छबीली किहै ऋतुराज बसंत को आवन २

समस्या ६२ वीं। आयो बसंत पै कंत नं आयो।

कुंजन कैलि कुहूके लगी पिक मोर चहूं दिश शोर मचायो॥
भौंरन भीर जुरी चहुँघानि सरोजन पुंज परागिव छायो।
अम्बक बम्ब लयो किसले वरु मंजरि सुन्दर रूप लखायो॥
कैसे रहे उर धीर भटू ऋतु आयो बसंत पै कंतन आयो॥१॥

बल्ली वितान तने बनधाम रहे तृण मेदिन फर्स बिछायो।
पौन वजीर पपीहन भाष्य लये अबली अलिवाय बजायो॥
चारणकैलि सुजान पढे यश कीर कपोतन गाज सुनायो।
मान गढ़ी तिय तोहनको नृप आयो बसंत पै कंत न आयो २

कीन्ह कुभाँति तमालनि कुंज रसालनिको बिन पत्र बनायो।
जारि दये तरु ढाखन ज्वाल दुखी कर कैलिन कूक बढायो॥
मन बिगारि सुजान दई भिगरे जगको भिन मान करायो।
क्यों नहिं मोह दिखाय भटू जोपै आयो बसंत पै कंत न आयो ३

गौन कराय लिवायके भौन पिया जब जान विदेश सुनायो।
मैं कितनो समझायरही अबहीं हरि मोहिं तजे कित जायो॥
मै हरिएक सुनी नहिं कान गयो कहि औध बसंत बतायो।
काह सुजान भयो विपरीति कि आयो बसंत पै कंत न आयो॥ ४॥

समस्या ६३ वीं । एरी भटू ऋतु आई बसंतहै ।

बग बागन फूलेहैं फूल अनेकन रंग सुगंधन कौन भनन्तहै ॥
देखे न काननं जे द्रुम पुष्प सो जानत याहि दवाग्नि अनन्तहै
भागि फिरें लखि आगी पलाशन ऐसे मेरे सखी बावरे कन्तहैं॥
बाहर होयके देखों तिहूं कढ़ि ऐरी भटू ऋतु आई बसन्तहै १ ॥

सोहै शरीर सुरंगित पीपर बस्त्रनकी छबि छाई अनन्तहै।
त्योंहीं फते बन बागनके नव पल्लव फूलन वायु बहन्तहै ॥
दूर भये हिम त्रास सबै सुखदायक चित्त तरंग उठन्तहै ।
छायो चहूँदिश मंगल पै बिरहीनकी बैरन आई बसन्तहै॥ २

समस्या ६४ वीं । ऋतुराजके चिह्न दिखान लगे।

हरियारी कृषीन की क्यारिन पै सरसौं चहुँधा पियरान लगे ॥ द्रुम जम्बु रसालन बौर फते चहुँओर सुगंध उड़ान लगे । सुन कोकिल चातक मोरनकी ध्वनि कानन चित्त लोभान लगे ॥ हिमत्रास सबै बिनशान लगे ऋतुराजके चिह्न दिखान लगे ॥ १ ॥

बन फूले पलाश दवारसे दीशत शोभा भरे लहरान लगे।
ध्वनि सारस मोरनकी चहुँघा पिक चातक शब्द सुनान लगे१॥
मृदु मंजिर गंध रसालनपै रसपी अली वृन्द उड़ान लगे ।
हिम त्रास सबै विनशान लगे ऋतुराजके चिह्न दिखान-लगे ॥ २ ॥

समस्या ६५ वीं । नैन लगे अंसुवा बरसावन ।

सावन आयो न आये पिया सखियां लगीं राग मलार सुनावन॥

नाव न जानों भटू वह गांव को छाये हमारे जहां मनभावन। भावन लागी घटा सबके जिय लालन मोहिं लगे कलपावन॥ पावन लागे महादुख प्राण सु नैन लगे अँसुवा बरसावन॥ १॥

समस्या ६६ वीं—ब्रज अलबेलिनमें बेलिनमें बरसन।
चहुंकित कुंजनमें परम निकुंजनमें पुंजन पलाशन पतान लागे परसन। कवि मदनेश ठौर २ भौंर भीरन पै सुरभि समीरन सुमीरन पै सरसन। अम्बुन अवनि कदम्बनकोकिला पै विदित बसंत यों दिसान लाग्यो दरशन। काम कर केलिनमें सकल सहेलिनमें ब्रज अलबेलिनमें बेलिनमें बरसन॥ १॥

चन्द्र चैत चांदनीमें चारु चौक चांदनीमें चम्पक चंमेली चोवा चन्दनकी चरसन। शीतल मलिन्द अलिविन्द मकरंदनमें सर सरि नीरन समीरनमें सरसन। कोकिल निकुंज पुंज किंशुक कदम्बनमें अम्बनमें ओनिमें दिगम्बरमें दरशन। वृन्दावन हेलिन नवेलीन वसंत लाग्यो, ब्रज अलबेलिनमें बेलिनमें बरसन॥ २॥

समस्या ६७ वीं। बीरबली धुरवां धमकावें।
धूरि भरे मतवारे महानभमें चहुँ ओर ते धावत आवें। हाथ सुरेश शरासन तानत बूँदके बाण घने बरषावें॥ सेवक जानि अकेलहि मोहिं न नेकहु हाय दया उरलावें। को बरजे पियप्यारे तुम्हें बिन बीर बली धुरवा धमकावें॥ १॥

सेवक पावस भूपति संग घनी बग पांतिकी सैन सुहावें ।
दादुर कोकिल मोरनकी व समीर तुरंग इतै उतधावें ॥
इन्द्र शरासन बुन्दके बान गराजत दुंदुभी घोर बजावें ।
भान गढी तन तोरन कारन बीरबली धुरवा धमकावें ॥ २ ॥
तुंगन तोपि चहूं दिशिते नभ भीर बलाक लै धीर मिटावें।
त्योंही पराग भरे मद सों गरजैं अतिहीं जुगनू चमकावें ॥
सीरी समीर सहाय लिये लखु लोनी लवंग लता लम कावें।
धावें गहे चपलाकी कृपानि ये बीरबली धुरवा धमकावें॥ ३॥
शोरकै घेरे घने २ आय बड़ी बड़ी बुंदनको बरसावें ।
लीन्हे जमाति फिरे बक पांति सुहात न नेक सबै तनतावें ॥
धावें चहूंदिश भाव भरी ललिते अस बिज्जु छटा चमकावें ।
पीय बिना बलहीन विचारिकै बीरबली धुरवा धमकावें॥ ४॥
टेरो करो पपिहा दिन रात औ मोर चहै तितो शोर मचावें।
गायो करें अलि आयो करै बकधायो करें जुगनू जित भावें॥
डोलै समीर सुभायनसों ललिते चपला कलाकोटि दिखावें ॥
पीयके अंक निशंक लगी अब बीरबली धुरवा धमकावें॥ ५॥

**समस्या ६८ वीं** । राग भरी वह फागकी गावनि ।
मेलनि कंठ भुजानिदै खेलनि झेलनि झोरि गुलाब उडावनि।
धूंधरि धूम धमारिनकी धँसि धावनि औ बलके गह लावनि॥
त्यों ललिते लपटानि सुबानि सों, तान भरी पिचकानी चला
वनि । आजु लखी नंदवार सखी भली राग भरी वह फागकी

गावनि ॥ १ ॥ लाल भयो नभ देखि परे सब मेघ समान गुलालकी छावनि। है झरसी रही केशरि नीरकी कीच मची यहि बीच सुहावनि ॥ त्यों ललिते चमके चपला सम बाल भरी मदमोद बढ़ावनि। भाग भरी ब्रज देखो सुनो सब राग भरी वह फागकी गावनि ॥ २ ॥

समस्या ६९ वीं। भाग भरे मुखपै सुहाग बरसत है ॥ पीरीशाल ओढनी पैहै रही अजब आब मंजु महताबकी झलक तरसत हैं। उरज उठान मन्द मुसक्यान हूपै कछू ओज गुण अधर अमीको परसत है। कबि लछिराम कल भूधनु मरोरदार कोरदार लोचनमें खाली सरसत है। जागे रंगजोबन अनंग अनुराग रुख भाग भरे मुख पै सुहाग बरसत है ॥ १ ॥

कुन्दनसों रंग नव जोबन सुरंग उठे उरज उतंग धन्य प्यारी परसतहै। सोहत किनारी बारी तन सुखकारी देव-शीश शशिफूल अधखुलो दरशतहै। बंदिया जड़ाऊ बड़े मोतिनसों नीकी नथ हँसत तरौननमें रूप सरसत है। गोरी गजगौनी लोनी लवन दुलहियाके भाग भरे मुखपै सुहाग बरसतहै ॥ २ ॥

समस्या ७० वीं। रंग दूसरो और चढैगो नहीं अलि साँवरो रंग रँग्यो सो रँग्यो।

लखिके मनमोहन मोहनी रूप सखी मन मेऱ्यो ठग्यो सो ठग्यो । इन चोंचदहायनकी को सुने अबतो जियजाय लग्यो सो लग्यो । उत्पात हजारन क्यों न करै चित छूटे न प्रेम पग्यो सो पग्यो ॥ रंग दूसरो और चढेगो नहीं अलि साँवरो रँग रँग्यो सो रँग्यो ॥ १ ॥

वह नैनदुनाली भुसुंडीसी फेरनि हीय हमारो दग्यो सो दग्यो । अहे साइतसे सब होस हवास सखी इक साथ भग्यो सो भग्यो । अबना कढिहै कढहूं न कढूं पर दागतो आनलग्यो सो लग्यो ॥ रँग दूसरो और चढेगो नहीं अलि साँवरो रँग रँग्यो सो रँग्यो ॥ २ ॥

समस्या ७१ वीं । हम प्रेमकी वारुणी छान चुकीं ।

जिनकी पद धूर चहें अज शंभु तिन्हें हमतो पहिचान चुकीं॥ तजिकै कुल कानि सबै तेहिसों यह प्रीति अनूपम ठानि चुकीं । जेहिको सिगरी बनितान चबाइन या चरचानिमें जानि चुकीं । कोउ केतो बुझाय कहे अबतो हम प्रेमकी वारुणी छानचुकीं ॥ १ ॥

अबका समुझावतहो हमको सबकी बतियां हम जान चुकीं । जिनको सनकादि न भेद लहें इमि सारी सयानी बखान चुकीं ॥ तिनकी छतियां लगके ब्रजनार सबै निज प्रीतम मान चुकीं । अरी एरी भला तिनसों हमहूं अब प्रेमकी वारुणी छानचुकीं ॥ २ ॥

समस्या ७२ वीं । सखीरी शिखापन तेरो भलो ॥
त्रिय एकही एक सिखाय रही जगमें शुभ पंथ निहार चलो । जप दान पतिव्रत शोधि हिये नाहिं स्वारथमें परचित्त छलो ॥ सत साहस शील सनेह फते श्रमधीर दया मनमें रखलो । इतनी सुन बोल उठी मुसक्यांय सखीरी शिखापन तेरोभलो ॥ १ ॥

प्रथमें न चहो चित तेतो कहो निबहो मनमोहनसों जबलों । न सहीरी वियोगकी बीरविथा न संयोगकी सौज-नसों अबलों ॥ हारि आये अजौं न रहो धौं कहा विरहान-लसों जियजात जलो । कवि सांची कहै सित कंठ सुजान सखीरी शिखापन तेरो भलो ॥ २ ॥

नंदलालकी प्रीति प्रवाह अथाहमें क्योंहीं दिनोंदिन जातग-लो । तजि भूषण अंग शृँगार सबै सुधि आठहूयाम जलोंकी बलो मथुरा ससुरामें बसें हरखूं तुम जानत नाहिन वाहि छलो । वह गूजरी ऊजरी बूझे कहारी सखीरी शिखापन तेरो भलो ॥ ३ ॥

उठ एरी लली इकबात कहूं नेक मूरति आजकी देखो चलो । बांसकी बांसुरी हाथ गहे जुडि छांह कदम्बके डार तलो ॥ घुँघरारी लसें लटके मुखपै रुचिसाल हिये बनमाल गलो । हरषीं यह बैन सुनाय तबै सखीरी शिखापन तेरो भलो ॥ ४ ॥

समस्या ७३ वीं । बरिहैं हरि ये मिथिलेश कुमारी ।
मिथिलापुर देखन राम चले सुनि बाम सबै निज काम बिसारी। चढी धायके आपने धौल अटारी निहार स्वरूप भईसो सुखारी ।। बर सांवरे योग सियांके सखी परचाप अहै शिवको अतिभारी । किंमिताहि उंठाय चढाय केरी बरिहैं हरि ये मिथिलेश कुमारी ।। १ ।।

रामको रूप लख्यो जब सीय भवानीके मंदिर माहिं पधारी। अम्बतोही विनवौं कर जोरि दयाकर कारज देहु सुधारी ।। ध्यानमें लीन भई शिव सीय तबै गिरिजा यह बैन उचारी। धीर धरो चित चेत करो बरिहैं हरि ये मिथिलेश कुमारी २

दापसौं चाप उठाय थके शिव काहु न ताहि सके तिलटारी । हाय भई भुव भट्ट विहीन कह्यो मिथिलेश विशेष दुखारी ।। बैन सुने भे सरोष सौमित्र सो नैनके सैनते राम निवारी । रामकी चातुर देखी कहें बरिहैं हरि ये मिथिलेश कुमारी ।। ३ ।।

समस्या ७४ वीं । वाहीं समय पुनि जान परेगो ।
तू मन मूरख चेतत ना मदमातो भयो जगमाहिं फिरेगो ।। जो मन आव सोई नहिं आवत वेद कलाम को टार धरेगो । व्यर्थ अनर्थ कियो जगमें कछु अर्थ नहीं सोइ काम परेगो ।। जादिन काल कराल ग्रसे कच वाही समय पुनि जान परेगो १

मनमानी करी न भली सजनी इन बातनसों नाहिं काज सरेगो । कोटिनबार बुझाय कही पिय प्रीतम को कछु ध्यान

धरेगो ॥ होगी वही घर जान जरूरहि लाख उपाय करे न टरेगो । पुछिहैं हरखूकी कथा धरके तब वाही समय पुनि जान परेगो ॥ २ ॥

छोडतहो तुमतो मगमें संगकी सखियां सब आप धरेगो । चुगली करिहैं निज लोगन तें कुलकानिकी हानिहमें ठहरेगो अनुरागमें आग सुझेगि जबै मम भ्रात पिता तुमते झगरेगो । मेरीकहा हरखू की कहा तब वाही समय पुनि जान परेगो ३॥

सत्य क्षमा न दया मनमें कबलोधन पापको प्रांत करेगो । चेतु फते परिवार भये बहुअंत न एकते काज सरेगो ॥ प्रांण निकारिके काल बली यमराजके सन्मुख जाय धरेगो । पाइहैं कर्मको दंड जबै तब वाही समय पुनि ज्ञानपरेगो॥ ४ ॥

दम्भ दुरास अनीति मृषा करिकै कबलों परद्रव्यहरेगो । लोककी लाज न भय परलोकको है वश लोभसे पाप भरेगो॥ काम न आइहै एको फते तन धाम यहीं सब छोड़ मरेगो । पाइहै कर्मको दंड जबै तब वाही समय पुनि जान परेगो ५॥

समस्या ७९ वीं । पावस न होय प्रलयकालको नमूना है । प्रीतमप्यारे परदेशको पधारे अब ताहीते सुरेश क्लेशदेत मोहिंदूनाहै । रैन अँधियारी जल होतहै अपार तासों आमो नाहिं यार आज भयो गेह सूनाहै ॥ बानके समान आसमान ते गिरत बूँद लागत शरीर चैन परत कहूनाहै । जारत तडित तन होतहै बिकल मन पावस न होय प्रलयकालको नमूनाहै ॥ १ ॥

गरजत मेघ मानों छूटतहै तोप नभ देतहै उडाये बचे वीरही कहूनाहै । सुनत अवाज मन टूक २ होत नाहीं ऐसो धीर बीर कोऊ देखो आजहूना है ॥ दादुरको शोर आदि बधिर श्रवण करै तड़ितको लखि विरहाग्नि ज्वाल दूनाहै । लक्ष्मण वियोगतेंहै दुखको न वार पार पावस न होय प्रलय कालकों नमूनाहै ॥ २ ॥

कोप कर घन गरजत बरषत जल घटाटोप अंधकार घलै कबहूनाहै । जुगुनू चमकि बरें तनमें लगावें आग तडित कृपाण प्राण लेत अजहूनाहै ॥ सैन बकपाँतिकी सजीहै डर पावें मोहि मोर शोरवानते लखत कभहूनाहै । प्रीतम वियोगते पुरन्दरने कोप कियो पावस न होय प्रलय कालको नमूना है ॥ ३ ॥

अथ नर्मदाष्टकप्रारम्भः ।

समस्या ७६वीं । दासके पातक टारनमें अब काहे विलंब करो महरानी ॥

प्रगटी गिरि गाहुरमेकलते सुर ईश मुनीशन शीश चढानी ।
विष्णुपदोंके समान गिनी सब पातक पोतक डाकिनी मानी॥
त्यों जगन्नाथ बखान करै सुभई जगमें सुरलोक कहानी ।
दासके पातक टारनमें अब काहे विलम्ब करो महरानी॥ १॥

पातक धाम न जानत हौं गुण अवगुणमें बुधिमों लपटानी ।
भाषत है जगन्नाथ कहों किमि जानतहो उरकी सुखदानी ॥

या जगमें नहिं सार कछू यह पेखि महामति मो अकुलानी ।
दासके पातक टारन में अब काहे विलम्ब करो महरानी २॥
मात पिता सुत भ्रात अनेक कुटुम्ब गृहादिकं है दुखदानी ।
कामरु क्रोधरु लोभरु मोहमें तत्त्व नहीं यह वेद बखानी ॥
भाषत है जगन्नाथ कृपालनी देव अदेवनकी वरदानी ।
दासके पातक टारनमें अब काहे विलम्ब करो महरानी॥ ३ ॥
तो पद कंजनके मकरन्दमें मो मति भौंर समान भुलानी ।
भाषत है जगन्नाथ कवी तुम कीरति कल्प लता सम जानी ॥
हों कर जोर करों विनती सुनिये जगमात दया गुण खानी ।
दासके पातक टारनको अब काहे विलम्ब करो महरानी ॥ ४ ॥
होत प्रभात अन्हायके अंगनि ध्यान धरें तटपे मुनिज्ञानी ।
शीतल निर्मल बारि बहै मन बांछित राजत हैं फलदानी ॥
भाषत जगन्नाथ गुणाकर दारिद टारत है तरके इमि ठानी ।
रावरे दासके तारनको अब काहे विलम्ब करो महरानी ॥ ५ ॥
वेद पढैं तटपै द्विजराजरु यज्ञ करैं बहु मंत्र बखानी ।
भाषत है जगनाथ कितेकहि दान करैं फल दीरघमानी ॥
केते जपैं शिवनाम सहस्र तिने शिवही फल देव प्रमानी ।
रावरे दासके तारनमें अब काहे विलम्ब करो महरानी ॥ ६ ॥
तनमें लपटाय भुजंग भली विध अंगविभूति रमाय महानी ।
लोचन तीन बनाय बघम्बर के अपनी रुचि त्यों हरषनी ॥

शंभु बनावत लाखनको बरमांग खवायके बैल चढानी । रावरे दासके टारनको अब काहे विलम्ब करो महरानी ॥ ७ ॥

तो गुण गांवत शेष सुरेश महेशहि आदिदे शारँगपानी । भाषत है जगन्नाथ दयालिन भोसन क्योंकर जाय बखानी ॥ पूत कपूत तो होवतु हैं पुनि मात न होय कुमाति सयानी । रावरे दासके तारनको अब काहे विलम्ब करो महरानी ॥ ८ ॥

समस्या ७७ वीं । यमुनाके कूलनकी लाल प्यारी झूलनकी उंड़त दुकूलनकी छवि दरशात है ॥

ब्रज भूमि आई सुखदाई तरु बेलिनकी नवल सहेलिनकी प्यारी बरसात है । सावन सुहावनकी शोभा सरसावनकी घंन घिर आंवनकी पौन परसात है ॥ वृन्दावन कुंजनमें मति आली पुंजनमें गुंजन छबीले देखि डर उरझात है । यमुनाके कूलनकी लाल प्यारी झूलनकी० ॥ १ ॥

फूलनकी क्यारिनमें द्रुमनकी डारिनमें वारो ब्रज नारिनमें जोगन जगात है । ललित लतानके पतानके बितान बीच रतन हिंडोलें अनमोल झलकात है ॥ मोरनके शोरनकी शोभा घनघोरनकी रसिक छबीले लाल कापै कहि जात है ॥ यमुनाके० ॥ २ ॥

प्यारी संगलालनकी अंगन विशालनकी मुकुता तन मालनकी ज्योतिले जगातहै ॥ बडे २ झोकनकी गहि २ रोकनकी हँसन बिलोकनकी रुचि उपजातहै । कुंडलके डोलनकी गोलसे कपो-

लनकी रसभरे बोलन छबीले जी समातहै ॥ यमुनाके कूलनकी लाल० ॥ ३ ॥

रसिक छबीले शिर मुकुट लटक नैन भौंहन मटक कर कटक समातहै। प्यारी अंग चूनरी चटक मुख पंजक जपै लटक२ लट आली लपटातहै ॥. किंकिन पुर कटि तटपै निपट द्युति मनकी विलोके भटकम मिटजातहै । यमुनाके कूलनकी लाल प्यारी झूलन० ॥ ४ ॥

फूलनके मालनकी हीरनके जालनकी अलक विशाल-नकी उरझ सुहातहै । बेंदीभाल केशरकी नासिकाके बेसरकी रसिक छबीले लाल आभा अधिकातहै । बेनी पीठ डोलनकी कामके कलोलनिकी झोंकनि हिंडोलनकी गोरी झिझकातहै॥ यमुनाके कूलनकी० ॥ ५ ॥

बेना बन्दनीकी वृषभानु नन्दिनीकी मनमत्थ मथनीकी नथिनीकी छबिजातहै । नैननके कोरनकी लाली लाल डोर-नकी दोउ चितचोरनकी हिय हरजातहै॥ दम्पतिके दन्तनकी द्युतिसों छबीले लाल हीरनकनी की घनी महिमा लजातहै ॥ यमुना० ॥ ६ ॥

करनके बालनकी पदतर बालिनकी लालनकी लालनसों लाल सरमात है । अंकभर भेटनकी भुजन लपटेनकी उमंग छबीलनकी दृगन समातहै ॥ दोहुनकी झांकी बांकी करकै

अदाकी भरी कौनकी कहाकी चाह बांकी रहजातहै ॥ यमु-नाके कूलन० ॥ ७ ॥

अंगन् अभूषनकी झलक मयूषनकी पूषनकी शोभा कर दूषन जनातहै । मधुर मलारनकी सुरसों उचारनकी भनक छबीले लाल सुनि बलजातहै ॥ दोउनके मोदनकी पावस विनोदनकी कीने अनुमोदनकी कविता सुहातहै । यमुनाके कूलनकी लाल प्यारी झूलनकी उड़त दुकूलनकी छवि दर-शातहै ॥ ८ ॥

समस्या ७८ वीं । मन्द करे चन्दहि अमन्द मुख प्या-रीकी ॥ हीरनके भूषण अदूषनते जागे ज्योति मोती मौलि मालाकार करके उजारीकी । सारीकी किनारी जरतारी दार दावें वोय दामनी दमंक लंक ललित कुमारी की ॥ वामन सुकवि नकवेसर विराजे मंजु अजबअदाते धरे नैननकटारीकी। ताहिते तरोरि हारि फेरि चहुँओरगते मन्द करे चंदहि अमन्द मुख प्यारीकी ॥ १ ॥

जागत जवाहिरकी ज्योति जगमग होत दशहूं दिशाते वोय उमडे अपारीकी ॥ हीरालाल नीलम अकूत मंजुमोतिनके भूषण विराजें अंग २ सुकुमारीकी । वामन सुकवि द्युति दाबत है दामिनीको उतर परीहै परी छवि सो सवारीकी ॥ लाज लजि जाहिं जब देखहि प्रत्यक्ष उंहि मन्द करे चन्दहि अमन्द मुख प्यारीकी ॥ २ ॥

कोमल कपोल गोल अजब गुलाबी रंग मंद मुसक्यानहै कृपाण सुकुमारीकी । बेसरि विचित्र मनमथको विराजे चक्र भौंहन कमानहै शान सुर तारीकी ॥ बामन सुकवि बिन्दु रोरी की ललाट मध्य मंत्रसों धरयोहै चतुरानन विचारीकी । नैनन कटारीको चलाये बरजोरी जाय मन्द करै चन्दहि अमन्द मुखप्यारीकी ॥ ३ ॥

पन्नगी परात शीश पटक पहारनमें देखिकै लोनाई औ निकाई लटकारी की । भौंहनकी बंकता बिलोकि पुरहूत धरयो धनुष उतारि जियहारि गर्वभारीकी ॥ बामन सुकवि मृग मीनन परात देखि कंज सकुचात मञ्जु लोचन कुमारी-की ॥ झांकत जबैही पोखराजकी लरीसी तबै मन्द करै चन्दहि अमन्द मुख प्यारीकी ॥ ४ ॥

हीरनके हार कर कंगनसु बाजूबन्द मोतिनकेमाल पहिरा-वतसवारीकी ॥ त्योंही शीशफूल नकबेसर सजाये फेरि बार २ चूनर कुसुम्बरंग सारीकी । बामन हमरि बश रहत सदाही ऐसे जावक लगावन चहत पग टारीकौ । पायन परत मेरे भाषो ऐसो ऐरी बीर मन्दकरै चन्दहि अमन्द मुख प्यारीकी ॥ ५ ॥

रोज रुलाओ ऐसी कहत हजार बार समुझो न एको बात मनाहिं विचारीकी । लागत न घात मेरी बातें ओहि ठौर जहां सखिन समूहको विनोद सुखकारीकी ॥ बामन सुकवितापे रातहे उजेरी यह बाजे पगपायल विचित्र झनकारीकी । बैज

नीन सारी ते छिपाये रहे ताहपै मन्द करै चन्दहि अमन्द मुख प्यारीकी ॥ ६ ॥

मंगल ते ललित लुनाई अंग अंगनकी बुद्धते विचित्र बुद्धि कीरति कुमारीकी। गुरुते गरूर भरपूर शान शोभादार शुक्रहूंसों सरस सलोनी छबि धारीकी ॥ बामन सुकबि त्यों शनीहूते सहस्र गुणी कज्जल कटाक्ष धरे बाढ़ अधिकारीकी । रबि प्रभामें बैस सोहत हमेश और मन्दकरै चन्दहि अमन्द मुख प्यारीकी ७

गोरे गोरे अंगनकी ललित लोनाई फैलि कुन्द औ कपूर धूर करत लाचारीकी । त्योंहीं पोखराजनकी पटल प्रभाते भरे हीरनके भूषण सुजागे ज्योति धारीकी ॥ बामन कबिनन्दब-की उपमा कहां लों बढै देखते दरै दामिनन दईमारीकी । बड़े २ नैननते तानत कटाक्ष तबै मन्द करै चन्दहि अमन्द मुख प्यारीकी ॥ ८ ॥

समस्या ७९ वीं । पांच ग्राह ग्रहत मतंग मन मेरेको ॥ करिकै करार केते पांय पारि बार २ पायो अवतार नर जानै हरि हेरेको । त्योंहीं अनुसार सदा अपने परस्वारथके करत उपाय रघुनाथ नाम टेरेको ॥ पै यहांतो आपति लखाति एक भारी महा छांडि क्योंहूं भजो विषय वासना घनेरेको । तऊ ज्ञान सरितामें न्हात समय कर्म इन्द्री पांच ग्राह ग्रहत मतंग० ॥ १ ॥

जपवे सदाही राम २ सीताराम राधे कृष्ण २ नाथ नाम तेरेको । करके कछू न और कोऊ काम काम यही रातदिन

आठों याम सांझ औ सबेरेको । काहूं भाँति खींच खांच अवशि किनारे लात्यों बिच भवसागरते जीवत सबेरेको । जौन पांच प्रबल महाये कर्मेन्द्रि नाथपाँच ग्राह ग्रहत मतंगमन मेरेको ॥ २॥

सुनि२ कठोर बैन मौन साधि बैठति है उत्तर कबों न देत कौन हेत तेरेको । त्योंहीं बहु भाँति नित मारपीट तेरी सहै कारन कहारी जैसे बर्तन कसेरेको ॥ बोली मृगनयनी उन मोते बहु बार कह्यो छांडि चले जाते हम कब या बखेरेको । जौन तेरे ये नैन गाल भाल कुच नासिकामें पांच ग्राह ग्रहत मतंग मन मेरेको ॥ ३ ॥

छांडिके सनेह देह गेह परिवारनको जाते बन माहिं आत्मज्ञान हेरेको । कबहूं न दीन ह्वैके जाय जाय भूपद्वार करते खुशामद न नीच नीच चेरेको ॥ अपमान सहते न जगमाहिं लोगनको रहते निश्चिन्त तज सबही बखेरेको । देख लेते जौन पञ्चबान जूके पांच बान पांच ग्राह ग्रहत मतंग मन मेरेको ॥ ४॥

हौ दयालु दीनानाथ भाषत पुराण वेद टारहु अवलम्ब यासु शील दीन फेरेको । विरद विचारो दौरि द्वारकाते आये छिन में नशाये सब द्रौपदी बखेरेको ॥ गजको जब ग्राह केवल एक ही गह्यो है तब तुरत बचायो रख लाज नाम टेरेको । इतै तो हहाये काम क्रोध लोभ मोह मद पांच ग्राह ग्रहत मतंग मन मेरोको ॥ ५ ॥

**समस्या ८०वीं । पिय प्यारे तिहारे निहारे बिना अँखियां दुखियां नहीं मानती हैं ।**

सब शंक तजे गुरु लोगनके कुलकानि की आनि न आनती हैं ॥ करि कोटि उपाय बुझावै कोऊ अपनी यह टेकहि ठानती हैं । परमेश जू और न जाने कछू यक प्रेमको पंथ पिछानती हैं । प्रियप्यारे तिहारे निहारे बिना अँखियां दुखियां नाहिं मानती हैं ॥ १ ॥

एकंही गांवमें बास सदा घर पासई हौ नाहिं जानती हैं । पुनि पांचयें सातयें आवत जात को आसन चित्त में आनती हैं ॥ हम कौन उपाय करैं इनको हरिचन्द्र महा हठ ठानती हैं । पिय प्यारे तिहारे निहारे बिना अँखियां दुखियां नहीं मानती हैं ॥ २ ॥

यह संगमें लागिये डोलें सदा बिन देखे न धीरजं आनती हैं । छिनहूं जो वियोग परै हरिचन्द तौ चाल प्रलयकी सुठानती हैं॥ बरनीमें घिरें न झरैंउ झुपैं पलमें न समाइबो जानती है । पिय प्यारे तिहारे निहारे बिना अँखियां दुखियां नहीं मानती हैं ॥ ३ ॥

व्यापक ब्रह्म सबै थल पूरण हैं हमहू पहिचानती हैं । पै बिना नँदलाल विहाल सदा हरिचन्द न ज्ञानहि ठानती हैं ॥ तुम ऊधो यहै कहियो उनसों हम और कछू नहीं जानती हैं । पिय प्यारे तिहारे निहारे बिना अँखियां दुखियां नहीं मानती हैं ॥ ४ ॥

# विशेष रस समस्याओंके कबित्त वा सवैया।

अंगमों सार सुगंध लगावत बास वही चहुँदेशको जहको। करि आली शृंगार अटाको चली मुख देखत लालनको लहको ॥ कंगन एक गिरो करसों वह सीढिन सीढिन फिरे बहको । कविगंग कहै यक शब्द सुनो ठननन् ठननन् ठननन ठहको ॥ ८१ ॥

राति समय रसकेलि कियो जब भोर भयो उठि मंजन धाई। नीरके क्षीरमें देह डुबी यमुनाजलसों जैसे चन्द्रकी छांई ॥ लैबुडकी जलसों निकसीं उलझी अलकैं मुख ऊपर आई । द्वै.कर केश सम्हार लियो निकसो रवि फोरि पहारके ताई ८२

नई अबला रसभेद न जानत सेज गई जिय माहँ डरी । रसबात कही तब चौंक चली त्योंहीं धायके कंतने बांहधरी॥ उन दोउनके झकझोरनमें कटि नाभिते अम्बर टूटि परी । करदीपक कामिनी झांपिलियो त्यहिकारण सुंदरि हाथजरी ८३

उर शोभित है बनमाल पीताम्बर बांसुरी बैन सुनावत है । इक छैल सखी मुसक्यात इतै नित जान अकेलहि आवतहै ॥ मन मेरो कियो वश प्रेम मों आपने शोच यही जिय छावतहै । दिन रात नहीं कल देखेबिना त्यहि कारण भौन न भावतहै ८४

एक समय वृषभानुसुता सो प्रात गई सरितानके खोरन । अञ्जन धोय अंगोछिके देह लगि बाहर बैठिके बार निचोरन॥ ब्रह्म भने त्यहिकी उपमा जलके कणिका बहैं केशके छोरन । मानहु चन्द को चूसत नागअमीरसच्वै चल्यो पूंछकी ओरन८५

श्रीवृषभानु सुता नँदलाल बिराजतहैं छबि पुञ्ज छये ।
कवि कृष्ण कहैं मन शील बहिक्रम चातुरता यक रंग रये ॥
सुख देखि सिहात सबै सजनी विधिसों विनवैं अभिलाष नये ।
यह रूप विलोकिबेको तनमों प्रति रोमन लोचन क्योंन भये८६

काजलसी निशि सज्जलसे घनतज्जलमें चली संग न साथी।
कुंज अँधियारी सिधारी हुसेन विहारीपै जातथी शुद्धिमें नाथी।
किञ्चित दब्बत सर्प लग्यो पग सर्प घसीटत एक पगाथी ।
जोर जँजीर जरो जकरो मनो छूटि चलो मनमत्त को हाथी ८७

जानतहै गति चोरकी चोर औ साहकी साह छलीकी छली।
कच लम्पटकी कचलम्पट गति मतिराम न जानेकहां धो चली॥
ठगकी ठग कामख कामखकी अरु जानत छैल छलीकी छली।
कहुँ फेरिदयो नथको मुकुतातिहिकारण फिरत गुलाबकली८८

शंकर तेल मलैरजको मृग नीरमें न्हाय सुवेष बनावै ।
भूषण धारण पुष्पनके फिर ओढ़ि दिगंबर देह दुरावै ॥
नाम असिद्ध असंभवकी धन देखि अभौतिक रूप दिखावै।
पुत्र अभावहि गोद लिये बिन बारन मांग सँवारत आवै ८९॥

कृष्ण रमायुत काहि लजावत को वर्षाऋतुको दुख टारे ।
कोमलता विध काहे दियो अरु कौन रहे जगजालते न्यारे ॥
धूनभमें केहिकोत्सव आरत कौन दुखी रामाधीन विचारे ।
मैनके मंदिर माखनको मुनि बैठ हुताशन आसन मारे ॥ ९०॥
कुच मूलमें तूलकी लाय किनारी हमे नित प्यारी दिखाइयोना ।

दिखाइयो तो न छिपाइयो फेरि लटैं मुखपै लटकाइयो ना ॥
लटकाइयो तो मटकायके भौह कटाक्षके नैन चलाइयो ना।
मुसक्याय मया सरसाय दया दरशाय हमैं तरसाइयो ना॥९१॥

घूंघट ओट कहा करि सुन्दरि घूंघटसे कछु तोर न लैहैं।
जोतोहि रूप दियो करतारने दूर खडी हम दूर चितैहैं॥
जानके गर्व कहा कर सुन्दरि काल्ह परो दिन येऊ न रैहैं।
या जिय जान भजो भगवान कि तोरे छिये वैकुंठ न जैहैं ९२

साहभये पकरैं कर चोरके चाटक ओट उठावत छप्परु।
दामरि कामरि भूलि गई अब आयेहो ओढि कपूरिया कप्परु
कान्ह भये कबते कुतवाल सखा लियेको दानत पप्परु।
तासों बडाई करौ कोइ जानेन काल्हके जोगी कलींदेके खप्परु॥९३॥

केतिक द्योस भये समझावत नेक न मानतहै मन भोंदू।
भूलिरह्यो विषया सुखमें कछु और न, जानतहै शठ तोंदू॥
आंखिन कानन नाक बिना शिर हाथ न पाँव नहीं मुख पोंदू। सुन्दरताहि गहें कोऊ, क्योंकर नीकसिजाय बडो मन लोंदू॥९४॥

दौरतहै दशहूँ दिशिको शठ वाय लगी तबते भयो बेंड़ा।
लाज न काज कछू नहिं राखत शील स्वभावके फोरतभेंडा॥
सुन्दर सीख कहा कहिदीजे भिदे नहिं बाण छिदे नहिं गेंडा।
लालच लागि रह्यो मन बीसरे बारहबाट अठारह पैंडा९५॥

डोले नवेली अटापरं बाल लसे कुसमानी छटान अनूखे ॥ लाल बिहाल भये मगमें लखि श्वास लई अधरारस-भूखे । सैन करी यमुनातटलों चलिये उत न्हाइये प्रेम पयूखे ॥ न्हायचुकी यों जनावतीहैं तिहि कारण केश निचोरत सूखे९६

जान सुजान सों प्रीति करी सहिकें जगकी बहु भांति हँसाई । त्यों हरिचन्द जू जो २ कह्यो सो करो चुपह्वैकर कोटि उपाई ॥ सोई नहीं निबही उनपै उन तोरत बार कछु न लगाई । सांची भई कहनावति वा अरी ऊंची दुकानकी फीकी मिठाई ॥ ९७ ॥

संग रह्यो सुख संग लह्यो कबहूं न भयो इकहूं पल न्यारो । छोड़के सोई चलो अब चाहत कैसे बने बल कोउ विचारो॥ प्रीतमको अरु प्राणन को हठ देख वहे अँसुआन पनारो।।कैधों चलेगो अगार सखी यह देहते प्राणके गेह ते प्यारो ॥ ९८॥

यह प्रेम कथा कहिबे की नहीं कहिबेही करो कोउ मानतहैं। पुनि ऊपरी धीर धरायो चहे,तनु रोग नहीं पहिचानतहैं ॥ कबि ठाकुर जाहि लगी कसकैं नहीं सो कसकैं उर आनतहैं। बिन आपने पैर बेवाई गये कोउ पीर पराई न जानतहैं९९॥

सजि सोहे दुकूलन बिज्जु छटासी अटामें चढ़ी घटा जोवतीहैं.। रँगराती सुनै ध्वनि मोरनकी मदमाती संयोग संजोवती हैं ॥ कहि ठाकुर वे पिय दूर बसे हम आंशुनसे तन

धोवती हैं। धनि वे धन पावसकी रतियां पतिकी छतियां लगि सोवतीहैं ॥ १०० ॥

परकारज देहको धारे फिरो पर जन्म यथारथ ह्वै दरसौ।
विषनीर सुधाके प्रमान करो सब भाँतिन सज्जनता सरसौ ॥
घन आनँदजीवन दायक हो कछु मेरी ये पीर हिये परसौ।
कबहूं वा बिसासी सुजानके आंगन मो अँशुआनहुंलो बरसौ १॥

## विशेष शृंगार रस और विरहावस्थाकी अपूर्व सवैया।

आयबो तीर बताइबो कोमल है मुसक्यायबो भावतो-जीको। छायबो मोद वही ललिते मिलजाइबो और लगाइबो हीको॥ रूप दिखायबो भायबो भावन नेह मिटायबो लागत फीको। जो हितको सरसायबो तो तरसायबो दूरहि ते नहिं नीको॥ १॥

कंजकलीसे उरोजनको पट खोल दुरे दरशावति काहे। नैननते तकि तोष उन्हें पर मैन भरे बरसावति काहे॥ जो सुख लीवे न दीवे तुम्हें यह पातक तो सरसावति काहे। नेह नये गुण गाहकको हक नाहकते तरसावति काहे॥ २॥

मानकी औध है आधी घरी अरु जो रसखान डरे डरके-डर। तोरिये नेह न छोड़िये पां परों ऐसे कटाक्ष महा हिय राहर॥ लाल गुपालको हाल विलोकरी नेक छुवेकिन दैक-रसों कर। "ना" कहिये पर वारत प्राण कहा लखिवारि है "हाँ" कहिवे पर॥ ३॥

मीस उरोज दोऊ उरमें भरिकै भुज कंठमें कंठ लगाये। चूमि कपोल कपोल मिलायके ऊरु दुहून सों ऊरु दबाये॥ काम कलोल कला कर कोटि कहै ललिते अतिही हरषाये। श्यामके संग उमंग भरी रतिरंगके कोटि तरंग दिखाये॥४॥

बात चली चलिवेकि जहां तहां बात सुहानी न गात सुहानो। भूषण साज सके कहिको महाराज गयो छुटि लाजको बानो॥ यों कर मींडत है बनिता सुनि प्रीतमको परभात पयानो। आपने जीवनको लखि अंत सु आयुकी रेख मिटावती मानो॥ ५॥

बैठी सलोनी सहेलिनके ढिग चन्द्र सों चारु प्रभा अधिकारी। ताही समय परदेशकी औंचक जायबेकी सुनी होत तयारी॥ सामुहे ह्वै पिय लालजी सों कछु बोल सके नहिं लाजकी मारी। कंजमुखी पर्यंक पै जाय रही मुरझाय मनोजकी मारी॥ ६॥

प्रीतम गौन सुने गजगौनीको भूषन भौन सबै बिसरो है। अंग परी तलबेली महा कबिराज तहां भरि आयो गरो है॥ नैननते जलधार धस्यो मिलि अंजनसों उर आनि परो है। चीरबेको तियको हियरा बिरहा बढई मनो सूत धरो है॥७॥

विनोदसों अंग उमंगन चारु अनङ्ग तरंग सनाय सनाय। सुगंध सने पट भूषण लाय सुकेशर सींचो बनाय बनाय॥ हँसी सिगरी निशि लालजी धारि गये बहु भाँति मनाय मनाय। भरी रिस शोचे खरी अब काहे अरी हरि हारे मनाय मनाय॥ ८॥

पांवरी आनि भिखारी मनो पजनेश सदाचित देत है फेरी। जीकी कठेठी अठेठी गँवारिन नेक नहीं कबहूं हँस हेरी॥

आंधरे रूपके जीमते बावरी जाने नहीं पर पीरता ऐरी ।
नंदकुमारहिं देखि दुखी छतियां कसकी न कसायन केरी॥ ९ ॥
घहरती घटा गणपाल लखो छहराती छटा छति द्वै अतियां।
लहराती लता लपटी लटके थहराती पपीहनकी बतियां ॥
नहराती नदीन नदीन मनो झहराती झरी दिनहूं रतियां ।
कहराती दरनिमें केकी लखो हहराती वियोगनकी छतियां १०
बिहरैं पिय प्यारी सनेह सने छहरैं चुनरीके झवा भहरैं ।
शिहरैं नवयौवन रंग अनंग सुभंग अपांगिनकी गहरैं ॥
बहरैं रसखान नदी रसकी घहरैं वनिता कुलही भहरैं ।
कहरैं विरही जन आतपसों लहरैं लली लाल लिये पहरैं॥ ११ ॥
अबहूं करि प्रीति सुनो हियधारि दयानिधिनेक जुड़ावो करो ।
मुरली ध्वनि प्राणपियारे पिया कबहूं मग कानन नावो करो ॥
गणपाल न चाहिये ऐसी तुम्हें नित चेतके हेत लगावो करो ।
अपनाय मिलाय बनाय हिये इतनो न भला तरसावो करो १२॥
कोहैं कहैं मोरवागण कूकि त्यों गोहैं अनन्द लता लहरानरी ॥
जोहैं बधू विधुकी पतिप्यारियां छोहैं ही बूंदरियां झहरानरी ।
गोहैं बलाकनकी गनपाल जू खोहैं अनेक विधी थहरानरी ॥
भौंहैं मनोजकी माती मनै लखि सोहैं घटापें छटा छहरानरी १३
दिन औधिके सोऊ व्यतीत भये पुनि पाई न प्रीतमकी पतियां ।
घहरानी अनोखी घटा नभ त्यों चपला चक चौंधत है अतियां
गनपाल मनोज मनोज करैं डरपावति आपनी कै घतियां ।
सजनी अब कोऊ उपाय रचो दुखदेतीहैं सावनकी रतियां १४॥

मकराकृत कुंडल गुंजकी माल वे लाल लसैं पग पाँवरिया ।
बछरानि चरावनके मिस भावतो दैगयो भावती भाँवरिया ॥
रसखान विलोकतही सिगरी भई बावरिया ब्रज डाँवरिया ।
सजनी इहि गोकुलमें विषसों बगरयो है नंदके साँवरिया १५॥

अंगन अंग मिलाय दोऊ रसखान रहे लपटे तरु छाँहीं ।
संग निषंग अनंग को रंग सुरंग सनी पिय दै गलबाँहीं ॥
बैन ज्यों मैन सुऐन सनेह को लूटि रहे रति अंतर जाहीं ।
नीबी गहे कुच कंचन कुम्भ कहे बनिता पिय नाहीं जु नाहीं ॥ १६ ॥

ऋतु पावस श्याम घटा उनई लखिकै मन धीर धरातो नहीं ।
ध्वनि दादुर मोर पपीहनकी सुनिकै क्षण चित्त थिरातो नहीं ॥
जबते कवि बिछुरे बोधाहितू तबते उर दाह बुझातो नहीं ।
हम कौनते पीर कहैं अपनी दिलदारतो कोऊ दिखातो नहीं १७

घूम घटा घनकी गरजैं चमकैं चपला छिति छूवैं फेरी ।
शोर करैं चहुँ ओरते मोर जुरी करैं कैलिया कूक घनेरी ॥
गोकुल सीरो समीर लगे केहि भाँति सों धीर रहेगी घनेरी ।
मोहिं बिना यह सावनकी निशि भावन कैसे बिताय है हेरी १८

मुख चुम्बनमें मुख लै जो भजे पियके मुखमें मुख नायो चहै ।
गल बाहीं गुपालके मेलतही मुख नाहीं कहै मनते न कहै ॥
नहिं देत निवाज छुवै छतियां छतियांमें लगाये ते लागी रहै ।
कर खैंचत सेजकी पाटी गहै रतिमें रतिकी परिपाटी गहै॥ १९॥

विपरीति रची रति दम्पति यों जहां छाय रहे बंगला खसके। कविचन्द दुहूनके मोद बढ्यो कहि सो कवि बृन्द कथा नसके। मुख चूंबतीं भावते भावते की अरु देती उरोजनके मसके। रसके उपजावत पुंज खरे पिय लेत परे रसके चसके ॥ २० ॥

हमको तुम एक अनेक तुम्हें उनहींके विवेक विकाने रहो। इत चाह तिहारी उते व्यभिचारी सनेह में तो उतसाने रहो ॥ हमतो अब औरके और भई उनहीं को प्रिया निज जाने रहो। अरसाने रहो सरसाने रहो हरसाने रहो तरसाने रहो ॥ २१ ॥

बतियान सुनायके सौतनकी छतियानमें साल सुलाय लैरी। सपनेहू न कीजिये मान आपे अपने योबना की बलाय लैरी। परमेश जू रूप तरंगन सों अंग अंगनि रूप रलाय लैरी ॥ दिन चारक तु पिय प्यारेके प्यारसों चामके दाम चलाय लैरी २२

सुन नीको न नेह लगावनोहै फिर जोपै लगै तो निबाहनोहै। अति ओछीहै प्रीतिकी रीति सखी नहिं रोसको जोस सुहावनोहै ॥ चलि चन्द्रमुखी ब्रजचंद मिलो तुमको हमें का समझावनोहै। दिन चारको रूप यह पाहुनोहै फिर तोपै रहेगो उराहनो है ॥ २३ ॥ खोजत जाहि सुरेश महेश दिनेशहू नित्य दुहूंदिश धावै। जाहि "फते" दृग आँजि तपो लखि पूरण ब्रह्म सबै सुख पावै ॥ गोतमनारि परे पद रेणुके देह शिला तजि स्वर्ग पठावै। सोपद की रज खोजबेको शिर धूर गयंद हमेश चढावै ॥ २४ ॥

इति ॥

दोहा—परमेश्वरकी कृपाते, पूर्ण भयो यह ग्रंथ।
रसिक जननके पठन हित, अहै प्रेमको पंथ ॥
प्रेम व्यथा शृंगार रस, और वीर रस आन।
बहु प्रकार वर्णन कियो, यामैं झूठ न आन ॥
रसिकनके आनन्द हित, यही ग्रंथ है एक।
उड़त समीर सुगंध मय, फूले फूल अनेक ॥
अरुण कमलसे नेत्र अरु, जिनके बाहु विशाल।
तिनहीकी पद रज चहत, नित बनवारी लाल ॥
सोरठा—प्रेमहि प्रेम अधार, प्रेम एक सांचो सदा।
सोई प्रेम अपार, चहुँदिशि यही दिखात है ॥
भूल चूक जो होय, बुध जन लेहु सुधार सब।
मैं बालकहूं सोय, बुद्धि हीन जानत नहीं ॥
सब कवियनको दास, या बनवारी लाल है।
और नहीं कोइ आस, एक आश तुम्हरी अहै ॥
मम प्रिय मित्र उदार, सूरज नारायण अहैं।
सर्व गुणन भंडार, उनहींमें हम देखियत ॥
दोहा—तिनकी आज्ञा पायकैं, ग्रन्थ कियो तय्यार।
उनहींकी सब कृपासे, मैं पायो सुखसार ॥

अथ समस्या अपूर्ति।

पूर्ति करनेके निमित्त लिखी गई।

१ बीच परी यह कीच कचाई २ नेह नवलासों अभिलाष सुन्यो रहो ३ किन लोगन देश बिगाड़ दियो ४ शंकर केहि कारण योगी भये ५ धर्म प्रचारक रीति बताओ ६ टूटि गयो

कँगना करसों ७ केहि कारण नारि सतीपन त्याग्यो ८ कर षिक पल्लभ सो पल्लभ औ कंज मुख ९ मूशल मूशला धार बहायो १० केहि कारण योगी जटा पटका ११ बांधे जटा केहि कारण योगी १२ पट पीत धरयो धरणीपै कहे १३ कहु ज्ञानकी मूलको कुंड कहां १४ घट कोरो बनो पर पानी भरै १५ केहि कारण नारि गुदावें गुदना १६ मानो शंकर पर चाबुक चलायो है १७ दशों अवतार किधौं राधा नैन तेरे हैं १८ एक नार छियानबे नैननसो १९ घन बीच काहे कुच लीक परी २० भूधर काहे भुजंग गह्यो २१ केहि कारण हंस चकोर लड़े २२ केहि कारण फूली फली न चमेली २३ वारिधिसे विष काहे कढ्यो २४ सतयुग पाछे क्यों भयो त्रेता २५ ढिग देखपरै गहि जात नहीं है २६ मानो सविता उछंग में २७ श्रोणित भार लचकी २८ बारहों महीना भौंर मनावत वसंत हैं २९ कानमें तूल और आंखमें धूली ३० तनिक लिख पठैवो आ सूरत ससुरकी ३१ मग जात रही गिर काहे परी ३२ हम बारहिं बार निहारत हैं ३३ कैसी करूं मैं प्यारे बिना ३४ केहि भाँतिसे धीरज होयनहीं ३५ अब नेक नहीं जिय लागत मेरो ३६ प्यारे मम प्राणअधार अहो ३७ प्यारी तुम्हारे समान न कोऊ ३८ हमको यह दुःख महान भयो ३९ प्रीति लगी कहूं छूटत है ४० प्रीति ये कैसी भई अनरीत है ४१ हजार काम छोड़के बजार देख आइये ४२ अपनी जरूर जाजरूर जाइयत है ४३ केहि कारण शंभु त्रिनैन भये ४४ केहि कारण वर्षमें तीन ऋतु ४५ केहि का·

रण देहमें रोमावली ४६ केहि कारण ब्रजमें कृष्ण भये ४७ भलो मकरन्दको बुन्द चुओ ४८ युवती क्यों मूँछ बिहीन भई ४९ आज प्राणप्यारी बिन मंदिर लगत सून्यों है ५० रावण राममाहिं राशि दुहूँ इक रार मची कहु कारणका ५१ कैसें बंधे जल जालके बांधे ५२ पानी बिन जानी जिन्दगानी कौन कामकी ५३ अबला केहि हेत पतिव्रत खोयो—केहि कारण विप्र ये पूज्य भये ५४ जिवैये लीलिगये पतरी ५५ सूमके ससुर सूमई होत हैं ५६ मृग सींगन आंसू जात बहे ५७ लागि पडे बबुलमें दाखे ५८ केहि कारण रैनमें चन्द्र भयो ५९ सीकेकी टूटन और लपकन बिलैयाकी ६० देनेको न छोड़े फिर पीछे दया देते हैं ६१ किमि कारण गौ मम ओर फिरी ६२ केहि कारण भारत आरत है ६३ केहि कारण वस्तु विनाश भई ६४ कैसन हो उन्नति भारतकी ६५ हमहूं कछु आज छपावत हैं ६६ नागिनकट पै बल खाय रही ६७ गौओंकी क्लेश लखोनहिं जाय दया करिकै अब बेग उबारो ६८ प्रीति निबाहन उपाय बताओ ६९ उजारचली ससुरारिक टोला ७० घूस पुलीस न लेत जहांहै ७१ तुम एक हमें हम हजार तुम्हें ७२ केहि कारण जननी पुत्र भखै ७३ लम्ब भये दिन कैसे कटैंगे ७४ लखिकै उरदी डरहू डर पावे ७५ साजियै सकार तो उदारको कबित्त होतं अरु साजिये ककार तो कमीलको बखानिये ७६ अजै मुख आरतको दीजे बैराट सुत ऐसो मुखचन्द तेरो जोवत कन्हाईरी ७७ ताप परातमें ऐसे परेहैं ७८ हैना ओस मोती पै बनस्पति खेतीहै ७९ बिन बांरन

मांग सँवारत आवै ८० कब इन्दुपै छांह भुजंग कियो ८१ आज गुलाबके फूलको सूंघ्यो ८२ आवत नारि उछारत निम्बू ८३ चार भुजानसों सोहत विष्णु ८४ पाँयन बाज रहें बहु घुँघरू ८५ आँधरे ने अधराते समय शशिमंडलमें रवि मंडल देख्यो ८६ मच्छ चढो गिरि राजके ऊपै ८७ प्यारीबिना सब रंग हैं फीके ८८ नई रीति हमें तो सुहावन लागत ८९ अनोखी भई यह प्रीति तुम्हारी ९० झूठहिं आज बघारत शेखी ।

( इसे अवश्य पढ़िये और अपने निज मित्रोंको सुनाइये )

उपरोक्त समस्याओंकी पूर्तियां निम्न लिखित पते पर आना चाहिये इसकारण सुकवि महाशयोंसे निवेदन है कि, यथाशक्ति समस्याओंकी पूर्तियां जहांतक होसके उनको भेजकर मुझे कृतार्थ कीजिये और उनसे जो पुस्तकबनेगी तो उन पूर्तिकर्त्ता महाशयोंके पास उत्तम पूर्ति आनेपर एक प्रति उनकी सेवामें पारितोकषार्थ अर्पण की आयगी. आशाहै कि सुकवि महाशय हमारीं इस प्रार्थना पर अवश्य ध्यान देकर यशके भागी बनेंगे ॥ इति काव्यरत्नाकर समाप्त ।

आपका प्रेमाकांक्षी-( निवेदक )-बनवारीलाल गुप्त, सदरबाजार, जबलपूर.

पुस्तक मिलनेका ठिकाना-
खेमराज श्रीकृष्णदास,
"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-यन्त्रालय-बंबई.

National Library
Calcutta-27
DBA0000005663HIN